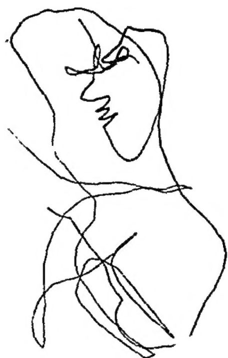
ठोस होते हुए

सुनील साहित्य सदन
ए-१०१, उत्तरी घोंडा
दिल्ली-११००५३



# ठोस होते हुए

---

वीरेन्द्र सक्सेना

मूल्य : पचास रुपये
प्रकाशक : सुनील साहित्य सदन
ए-१०१, उत्तरी घोंडा
दिल्ली-११००५३
संस्करण : प्रथम, १९८८

कलापक्ष : हरिप्रकाश त्यागी
मुद्रक : चोपड़ा प्रिंटर्स, मोहन पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

THOS HOTE HUYE (Poems) by Virendra Sexena
Price : Rs. 50.00

कई अर्थों में अपने अग्रज
और कवि-मित्र
श्री जगदीश चतुर्वेदी को,
जिनकी 'अकविता' में भी
'कविता' मौजूद है !

# प्राक्कथन

स्वातंत्र्योत्तर काल में 'कनुप्रिया' (धर्मवीर भारती), 'उर्वशी' (रामधारीसिंह दिनकर), 'सूर्यपुत्र' (जगदीश चतुर्वेदी) आदि मे प्रेम के ज्वार-भाटे को पौराणिक कथाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। ये सभी कृतियाँ 'खंड काव्य' की श्रेणी में परिगणित की जाती हैं। उधर 'युग्म' (जगदीश गुप्त) मे नर-नारी प्रेम के विविध रूपों का चित्रण उपलब्ध है, लेकिन वह कई खंडो के विस्तार के बावजूद 'कविता-संग्रह' माना जाता है। कारण शायद यह है कि मानवीय प्रेम को अभी वह महत्त्व नही मिला, जो उसे मिलना चाहिए था। मेरी धारणा है कि कथा-साहित्य की तरह काव्य को भी पौराणिक प्रतीको का मोह छोड़कर आज के आदमी को महत्त्व देना चाहिए, तभी वह अधिक यथार्थवादी और संप्रेषणीय बन सकेगा।

मैं मूलतः विज्ञान का विद्यार्थी रहा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और यथार्थवादी रुझान के कारण मेरा कथा-साहित्य के प्रति विशेष लगाव था, इसलिए स्वयं भी साहित्य-लेखन की शुरुआत कहानी-लेखन से की। तदुपरात आलोचना के क्षेत्र मे मैंने वैज्ञानिक शोध-आलोचना की एक नई पद्धति 'सांख्यिकीय विश्लेषण' विकसित की, जिसका हिन्दी जगत मे पर्याप्त स्वागत हुआ और मेरा उत्साह बढ़ा। कहानी और कथा-आलोचना के बाद, कविता के क्षेत्र मे पदार्पण कुछ विपर्यय ही कहा जाएगा, क्योकि प्राय: कविता के बाद कहानी-उपन्यास के क्षेत्र मे तो बहुत सारे लेखक आए, लेकिन मेरे जैसे विपथगामी शायद कम होंगे। मेरे अग्रज कथाकार हृदयेश को जब मालूम हुआ कि मैं एक काव्य-पुस्तक प्रकाशित करा रहा हूँ, तो उन्होने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पत्र लिखा—'आप कविताएँ भी लिखते हैं, यह बात इससे पूर्व कभी मेरी जानकारी में नहीं थी। कभी आपने इसकी चर्चा भी नही की थी। ''यदि आप अब कविताएँ लिखेंगे तो आपके निकट के व्यक्ति ही गलत-सलत सोच सकते है।' इस पत्र से जाहिर है कि यथार्थवादी कहानीकारो के मन मे कविता के प्रति एक ऐसी विरक्ति उत्पन्न हो गई है, जिसके कारण वे उसे गभीरता मे नही लेते या संशय की दृष्टि से देखते हैं।

लेकिन कहानी से कविता की ओर अतिक्रमण (यदि इसे 'अतिक्रमण' ही माना जाए) करते हुए मैंने एक बात शिद्दत से महसूस की है कि किसी कथ्य को अगर गहराई अथवा तीव्रता के साथ अभिव्यक्त करना हो, तो कविता से उपयुक्त

कोई दूसरी विधा नहीं हो सकती। संक्षिप्तता, शब्दों के सार्थक प्रयोग, वाग्वैदग्ध्य और अनुभूति की तीव्रता, आदि गुणों के कारण वह पाठक पर सीधा प्रभाव डालने की क्षमता रखती है; शर्त बस यह है कि उसमें जटिलता, अत्यधिक कल्पनाशीलता और चमत्कार आदि से बचा जाए। मैंने कोशिश की है कि अपनी कविताओं में लघु कथाओं जैसी सरलता और संप्रेषणीयता विद्यमान रहे, चाहे इसके लिए कविता के परंपरा-स्वीकृत मानदंडों, रस, अलकार और छंद-विधान आदि को छोड़ना पड़े। यह कार्य कठिन था, क्योंकि सीधी-सरल रेखा खींचना प्रायः कठिन होता है।

एक बात और। इन कविताओं को एक ऐसे क्रम में रचा गया है, जो एक पूरी कथा का आभास देता है। और यह कथा, प्रेम के उसी ज्वार-भाटे की है, जिस पर पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से अनेक 'खंड काव्य' लिखे जा चुके हैं और अभी भी लिखे जा रहे हैं। तो क्या यह पुस्तक भी एक 'खंड काव्य' है? शायद नहीं, क्योंकि इसमें 'खंड काव्य' के पात्रों जैसी 'महानता' नहीं है। न ही इसमें प्रेम को किसी ऐसे दर्शन या अध्यात्म से जोड़ने की कोशिश है, जो इसे महिमा-मंडित कर सके। इसमें तो एक सीधे-सादे साधारण नागरिक का प्रेम है, जो उसके लिए जिंदगी का सबसे बड़ा सच बन जाता है। उसके लिए वह एक ऐसी 'यात्रा' सरीखा है, जिसमें यात्रा की तैयारी है, उसके कष्ट और आराम हैं और फिर मंजिल तक पहुँचने का सुख भी है। लेकिन इसके बाद उसे मंजिल से अलग होने का त्रास भी सहना पड़ता है। यही प्रेम की यात्रा का सर्वाधिक यातनादायक पक्ष है।

अस्तु इस प्रेमपरक काव्य को किस श्रेणी में रखा जाए? 'युग्म' की तरह मात्र 'कविता-संग्रह' या कुछ और? मेरा विनम्र सुझाव है कि 'काव्य-नाटक' या 'नाट्य-काव्य' की तर्ज पर क्यों न इसे एक 'कथा-काव्य' कहा जाए! मेरा यह सुझाव कहाँ तक समीचीन है, इस बारे में सजग पाठकों और सुधी आलोचकों की सम्मति की मुझे प्रतीक्षा रहेगी।

□ १८/११, पुष्पविहार, साकेत
नई दिल्ली-११००१७

—वीरेन्द्र सक्सेना

**प्रवेश**

एक अद्वितीय 'अनुपमा' की
खोज कथा—
सहानुभूति, सह-अनुभूति और
हर्ष-व्यथा,
प्रस्तुत है क्रमशः
आगामी पृष्ठों पर…

## संबंधहीन संबंध

संबंधों के
इस संसार में
कोई संबंध बिना संबंध के भी
होना चाहिए,
क्योंकि
संबंधहीन संबंध ही
वह संबंध हो सकता है
जिसमें कोई
प्रतिबंध नहीं होता।

## विश्वास

जिंदगी बहुत छोटी है मित्र,
पर विश्वास जिंदगी से बड़ा है।
आदमी ने जो भी काम किए हैं
दुनिया में,
केवल विश्वास के बल पर किए हैं।
'आत्मविश्वास' भी
एक प्रकार का विश्वास ही तो है।

आत्मविश्वास हो या मित्रों पर विश्वास
मतलब दोनों का एक ही है।

क्योंकि जब खुद की आत्मा
झूठी पड़ने लगती है,
तभी मित्रों का विश्वास भी
दगा देता है।

## सौंदर्य-बोध

यह माना कि तुम बहुत सुन्दर हो
पर यह दिखावे की सुन्दरता कितने दिन की है ?
हद से हद, दो-चार बरस और !
यह माना कि लोग तुम पर
आसक्त हो सकते हैं,
हुए भी होंगे।
पर और कितने दिन ?
हद से हद, दो-चार बरस और।

असली सुन्दरता
जो मृत्यु-पर्यन्त साथ देती है,
केवल मन की सुन्दरता ही हो सकती है।
क्योंकि उसके साथ
दो-चार बरस का बंधन नहीं होता।
कभी-कभी तो मन की सुन्दरता
लोगों के दिलों में ऐसी घर कर जाती है,
कि लोग उसी के कारण
व्यक्ति के न होने पर भी
उसे याद करते रहते हैं।

अपने रूप को तुम सँवारो,
सुन्दर, बल्कि और सुन्दर तुम दिखो
मुझे एतराज नहीं।
पर मन की सुन्दरता के बिना

यह रूप भी कितने दिन टिकेगा
हद से हद, दो-चार बरस और!

## एक सूर्यमुखी के प्रति

सूरजमुखी के रंग की साड़ी में
तुम बिलकुल सूरजमुखी लगती हो :
उतनी ही सुन्दर, उतनी ही आकर्षक
और उतनी ही तेजोमय—
जितना कि सूरजमुखी का फूल !

सूरजमुखी का रंग वसंत का रंग है,
इसलिए सूरजमुखी साड़ी मेरी आँखों में
वसंत के सपने सजा देती है।
वही वसंत जो ऋतुराज है—
और जिसमें सारी प्रकृति रंगीन हो उठती है।

सूरजमुखी के रंग की साड़ी में तुम्हें देखकर
मैं तुम्हारी उस गुलाबी साड़ी को भूल गया हूँ,
क्योंकि गुलाब बस गुलाब है
और सूरजमुखी वास्तव में सूरजमुखी है !

गुलाब का आकर्षण केवल
मादकता का आकर्षण है,
लेकिन सूरजमुखी का आकर्षण अपने तेज के कारण
देखने वाले की दृष्टि को बाँध देता है।
और वह आसानी से समाप्त नहीं होता।

## संभावना

सोचता हूँ
आखिर क्या है तुममें
क्यों मैं तुम्हारे प्रति
इतनी ज्यादा
रुचि रखता हूँ ?
क्यों मैं चाहने लगा हूँ
अपने अंतरतम से
कि मैं तुम्हारे लिए
कुछ कर सकूँ ।
तुम्हें 'साधारण' से अलग
कुछ 'विशिष्ट' मैं बना सकूँ ।

हो सकता है
मेरी धारणाएँ गलत हों
लेकिन तुम्हारे व्यवहार में
एक कोमल हृदय की
स्निग्धता और आत्मीयता है।

यों अब मैं तुम्हें
अपने से भिन्न नहीं
मानता हूँ ।
अपनी सफलताओं-असफलताओं को
बेझिझक तुम्हारे सामने
खोल देता हूँ ।

## पहचान

तुम्हारी साफ़गोई मुझे
अच्छी लगती है

क्योंकि उसमें
चालाकी नहीं होती।
और तुम्हारा स्वभाव
मुझे पसंद है
क्योंकि उसमें सहजता है।

तुम्हारा चेहरा
स्वप्न सुन्दरी-सा भले न हो
पर उसका हावभाव
इतना आत्मीय है
कि मैं तुम्हें बस
अपने सामने
बिठाये रखना चाहता हूँ।

## अपनापन

लोग समझते हैं तुम्हें
राजधानी की 'ग्लैमर गर्ल'
लेकिन मैं जानता हूँ—
जब भी तुमसे मिलता हूँ,
तुम किसी ग्रामबाला की तरह
सहज अपनेपन से
मिलती-बतियाती हो।

## चाहता हूँ

तुमसे मैं खास क्या चाहता हूँ
यह अभी स्पष्ट नहीं है,

लेकिन इतना स्पष्ट है
तुम्हारी 'निकटता' मैं
चाहता हूँ ।

तुमसे कोई ऐसी चीज
नहीं माँगूंगा
जो तुम न दे सको,
लेकिन तुम्हारी 'आत्मीयता'
अवश्य चाहूँगा ।

तुम मुझे किसी भी रूप में
देखो या स्वीकार करो,
लेकिन तुम्हारी 'मित्रता'
मैं खोना नहीं चाहूँगा ।

## फूल का ग़म

फूल को खिला देखकर
समझते हैं लोग—
इसे कोई ग़म नहीं ।
लेकिन जिसने
कलियों को असमय
मुरझाते देखा है,
वह जानता है—
फूल भी एक प्राणी है
और हर प्राणी की तरह
उसे भी कोई न कोई ग़म
सीने में छिपाना पड़ता है ।

## आखिर कब तक ?

तुम्हारे चेहरे पर
हँसी थोड़ी देर टिकती है
ग़म ज्यादा देर।
कारण क्या है मित्र !
ग़मों ने तुम्हें घेर लिया है,
या तुम उन्हें अपनाये हुए हो ?

अगर पहली बात सच है,
तुम उन्हें झिड़क दो।
अगर दूसरी सच है,
तुम उन्हें झटक दो।
नहीं तो किसी दिन
मुझे ही आना होगा—
तुम्हारे और उनके बीच।

## कुछ मुद्राएँ

हँसती हुई तुम
मानो दुनिया के सुख !
खोई-खोई तुम
मानो भटका हुआ मैं !
उदास हुई तुम
मानो हार गया मै !

## भीगी पलकें : कुछ प्रतिक्रिाएँय

[१]
तुम्हारे चेहरे को
जितना मैं

भुलाने की
कोशिश करता हूँ,
उतना वह
और याद आता है।

तुम्हारी भीगी आँखों से
जितना मैं बचने की
कोशिश करता हूँ,
उतनी ही वे
सामने आ जाती हैं।

[२]

कल मैं बराबर
तुम्हारे बारे में सोचता रहा।
सामने नाचता रहा तुम्हारा चेहरा
और उस पर जड़ी दो भीगी आँखें।

[३]

तुम्हारी आँखें मेरे
सामने क्या बरसी,
मैं उनके नेह से
भीतर तक भीग गया।
अब न रोना कभी
मेरे सामने यों,
नहीं तो मुझे डर है
कहीं मैं भी
रोने न लग जाऊँ।

## अच्छाइयाँ : कुछ अनुभव

[१]

किसी भी व्यक्ति में
अगर मैं अच्छाइयाँ ढूँढता हूँ,

तो क्या बुरा करता हूँ ?
बुराइयाँ तो मुझमें भी
क्या कम हैं।
फिर मैं क्यों दूसरों में
बुराइयाँ ही ढूँढ़ूँ
और उन्हें स्वीकारूँ ?

[२]

तुम्हारा अगर कहा मानूँ
तो तुम एक सीधी और
अच्छी लड़की नहीं हो।
लेकिन क्या यह तुम्हारा
सीधापन और अच्छापन
नहीं है :
कि तुमने यह बात
स्वयं अपने मुख से
मेरे सामने कह दी ?

[३]

मेरा तुम्हें अच्छा मानने का
एक अच्छा परिणाम तो होगा ही,
कि तुम मेरे लिए तो
अच्छी रहोगी ही !

## दावे और वादे

मैंने तुमको जान लिया है
यह दावा तो मैं नहीं करूँगा
क्योंकि दावों पर मुझे यक़ीन नहीं

मैं उन लोगों में भी नहीं हूँ
जो एक साँस में दावे करते हैं
और दूसरी में वादे।
दावे और वादे, वादे औ' दावे
दुनिया को जीतने के लिए
वे इन्ही झूठे हथियारों का सहारा लेते हैं।
मै तुमसे कोई वादा भी नही दोहराऊँगा
क्योंकि वादों पर भी मुझे यक़ीन नहीं।

मैं तो केवल मन की बात करूँगा,
क्योंकि तुम्हारा मन
अगर मेरे मन की बात समझता है,
तो वही सबसे बड़ा वादा है
और वही मेरा दावा भी !

## मेरे साथ आओ

तुम मेरे साथ आओ—
मैं तुम्हें सारी धरती की
सैर कराऊँगा।
तुम देख सकोगी सागर की गहराई,
और आकाश का असीम विस्तार।

तुम अपने खोल से बाहर आओ—
मैं तुम्हें प्रकृति की गोद में ले जाऊँगा।
तुम अनुभव कर सकोगी उसका आकर्षण,
उसकी सहजता और उन्मुक्तता।

तुम अपनी नींद से जागो—
मैं तुम्हें मनुष्य निर्मित संसार दिखाऊँगा।

मानव का यह संसार
उसके जोखिम, श्रम और साहस का
वेहतरीन नमूना है।
अगर तुम कोशिश करो
तो तुम्हारे लिए भी यह संसार
प्रेरणाओं का स्रोत बन सकता है।

## गांठ-गठीला प्यार

मैं पहले से अगर साथ होता
तो तुम्हारे जीवन में कोई गाँठ
नहीं होती
तुम्हें इतना मुक्त कर देता
सारे बंधनों से
कि तुम खुले आकाश में विचरण करती
और खुली हवा में सांस लेतीं।

प्यार हमें वांधता तो है
पर वांधने का अर्थ यह तो नहीं
कि हम वांधने वाली रस्सी
बिलकुल ढीली न रखें
उसे इतनी गाँठ-गठीली कर दें
कि हमारा प्यार ही उसमें
फाँसी लगाकर मर जाये।

## गुलाव—पीला और लाल

पीली साड़ी में तुम
पीले गुलाव-सी लग रही हो!

पीला गुलाब,
जो गुलाब तो है
पर जिसमें पीलापन है।
तुम्हारे चेहरे पर भी आज
लालिमा नहीं, कुछ पीलापन है।

यह पीलापन
मात्र साड़ी का रेफ्लेक्शन नहीं,
यह तुम्हारे अन्दर के भय का
पीलापन है।
इस भय को छिटक दो

निर्भय तुम !
मेरे साथ आओ।
मैं तुम्हारी आँखों से डर निकालकर
उनमें मस्ती भर दूँगा,
तुम्हारा चेहरा भी तब
पीला नहीं रहेगा।
वह गुलाब जैसा
खिल जाएगा।

## आग और आग

तुम्हारे भीतर
एक धधकती हुई आग है।
उस आग का चूँकि
कोई इस्तेमाल नहीं हो रहा,
इसलिए इस वक्त
वह तुम्हीं को झुलसा रही है।

इस आग को तुम
कुछ दिनों के लिए मुझे दे दो।

मैं उसका बखूबी इस्तेमाल करूँगा—
उससे तुम्हारे विरोधियों को
भस्म कर दूँगा।

बाद में उस आग को
मैं तुम्हें वापस कर दूँगा।
तुम्हें उसका इस्तेमाल भी सिखाऊँगा।
तुम स्वयं देखोगी और चकित होगी—
कि आग का इस्तेमाल होने से
तुम्हारे सारे अंतर्विरोध नष्ट होंगे।
तुम एक नई नारी के
रूप में निखरोगी।
संभवतः संसार में
क्रांति ला दोगी।

## ग़मों का गणित

दो एक जैसे परेशांहाल
अगर मिलकर एक हो जाएँ,
तो दुनिया के हजार लोगों का
कर सकते हैं मुक़ाबला

अलग-अलग होने से जो परेशांहाल
रहा करते हैं महज
अपने गमों में मुब्तिला,
मिलकर एक होने से वे
जमाने भर के गम मिटाने का
रखा करते हैं हौसला।

ख़ुदग़रजी की इस दुनिया में
आदमी आदमी के बीच

हद दर्जे की हैं दूरियाँ,
लेकिन दो एक जैसे परेशांहाल
मिटा सकते हैं यह फ़ासला।

## स्वप्न का सुख

लाल साड़ी में तुम
मुझे किसी स्वप्न की याद दिलाती हो।
मैं जानता हूँ—
वह स्वप्न स्वप्न ही रहेगा;
फिर भी मुझे
लाल साड़ी मे तुम्हें देखना
अच्छा लगता है।
कभी-कभी सपने देखने में भी तो
सुख मिलता है,
चाहे वे सपने
झूठे ही क्यों न हो।

## ग्रीन सिग्नल

हरा रंग हरियाली का प्रतीक है
और आगे बढ़ने का संकेत भी
कल तुम जब हरी साड़ी में आईं
मुझे लगा तुम हरी-भरी हो
और गतिशीलता की समर्थक भी!
गोरी कलाई पर सुनहरी रोमावली
क्या कम थी!

ऊपर से तुमने चटक चूड़ियाँ भी
पहनी थीं ।

चेहरा तुम्हारा स्वयं ही
इतना स्निग्ध और साफ़ है
कि कोई उसे देखकर ही
फिसल सकता है ।
ऊपर से तुमने हल्का मेक-अप
भी किया था—
होंठों पर हल्की लिपस्टिक,
आँखों मे महीन काजल
माथे पर छोटी-सी बिंदी !
कुल मिलाकर,
न सही विश्व-सुन्दरी !
पर तुम उस मेनका सदृश तो थी ही
जिसने विश्वामित्र को
मोह लिया था ।

## कलर-ब्लाइंडनेस

'आसमान का रंग कैसा है ?'
'नही मालूम ।'
'पूर्णिमा का चाँद कैसा है ?'
'नहीं मालूम ।'
'फिर तो तुम्हें यह भी नही
मालूम होगा—
इस गहरी नीली साड़ी में तुम
स्वच्छ निरभ्र आकाश का
भरा-पूरा चाँद नज़र आती हो,
और आस-पास का सब कुछ
बहुत-बहुत अधूरा लगता है ।'

तुम क्यों मुझे पुकारते हो
उतनी दूर से—
किनारे पर खड़े ?

मैं एक कमलिनी हूँ वीरानों में खिली
मेरे चारों ओर के ताल में
पानी कम है, कीचड़ ज्यादा
तुम क्यों मुझे देना चाहते हो
ताजी हवा की स्फूर्ति—
बिना किसी मूल्य के ?

मैं एक शमां हूँ जलती हुई लगातार
जो न बुझती है, न खत्म होती है
रोशनी देती रहूँगी मैं
यों ही अँधेरों को
तुम क्यों मेरी रोशनी में
मिलाना चाहते हो—
अपनी रोशनी भी ?

मैं एक जलती हुई मशीन हूँ ऐसी
जो मानव के उपयोग के लिए
होती है।
मशीन का काम है चलना—
केवल चलना।
तुम क्यों मुझे मशीन मे
बनाना चाहते हो—
एक सहृदय मानवी ?

## प्रत्युत्तर में एक कविता

मैं तुम्हें पुकारता हूँ दूर से
इसलिए मेरी आवाज तुम तक
पहुँचे, न पहुँचे

पर किनारे पर खड़ा मैं
जो संकेत तुम्हें भेज रहा हूँ
वह तो तुम तक पहुँचेगा ही ।
और तुम अपनी जिंदगी की नाव को
किनारे तक लाने की
स्वयं ही कोशिश करोगी
सामर्थ्य भर !

ओ कमलिनी वीरानों की
तुम्हारे वीरानों को
मैं आबाद कर दूँगा—
अपनी मौजूदगी से ।
तुम्हारी जड़ों को मैं अपने
नेह से सींचूँगा,
और तुम्हें ऐसी ताज़ी हवा की
स्फूर्ति दूँगा
कि तुम्हारी सुगंध से मिलकर
वह हवा भी अपने को धन्य मानेगी ।

यह सच है कि तुम एक
जलती हुई शमां हो
और अपने जलने से जहाँ को
रोशन कर रही हो ।
मैं भी तो एक दीप हूँ जलता हुआ
क्यों न हम दोनों अपनी
रोशनी मिला लें ?
और फिर मिलकर इस
अँधेरे जहाँ को रोशनी दें ।

चलते-चलते तुम एक मशीन
बन गई हो,
यह तुम्हारा भ्रम भी हो सकता है ।
क्योंकि मशीन का ही नहीं
मानव का काम भी है चलना ।

मैं भी तो चल रहा हूँ तुम्हारे साथ
फिर क्यों घबड़ाती हो चलने से ?
मानवी होकर,
एक मानव का साथ देने में
इतनी डरती क्यों हो आखिर ?

## साथ

तुम्हारी आँखों की नमी
मेरे मन में उदासी ला देती है
तुम्हारे होंठों की हँसी
मेरे मन में
नई उमंगें जगा देती है।

तुम खुलकर कहो
या न कहो—
पर मै जान गया हूँ
कि तुम भी
मेरे दुख से दुखी होती हो
मेरे सुख से सुखी।

अलग-अलग एकात में
दुखी-सुखी होने से
यह क्या बेहतर नही होगा,
कि हम कभी मिलकर बैठें
और अपने सुख मिलाकर
दुगुने कर ले
और दुःख बाँटकर
आधे ?

## लाभ क्या है ?

तुम कहती हो—
मिलने का लाभ क्या है ?
मैं पूछता हूँ—
लाभ तो कोई नही है
पर हानि क्या है ?

तुम हानि नहीं बता पाती हो
तो मैं कहता हूँ—
लाभ भी नही, हानि भी नहीं
फिर तो यह बिना हानि-लाभ का
व्यापार है।

चलने दो जब तक चल सके
बाद मे एक दिन तो बंद होगा ही;
क्योंकि पैसे की यह दुनिया
बिना लाभ-हानि के व्यापार को,
किसी की व्यक्तिगत जिंदगी मे भी
ज्यादा दिन नही चलने देती !

## लोग—आजकल

आजकल लोग मुझे राह चलते बधाई देते हैं।
मैं उनसे बधाई का कारण पूछता हूँ—
तो वे बस थोड़ा-सा मुसकरा-भर देते हैं
और हाथ मिलाकर आगे बढ़ जाते हैं।

मैं आजकल जिधर भी निकलता हूँ,
लोगों की मंद मुसकराहटें
और उनकी हलकी फुसफुसाहटें
शुरू हो जाती हैं।

लेकिन आश्चर्य—
बदले में जब मैं उनकी ओर देखकर
मुसकराता हूँ,
तो उनकी वे मुसकराहटें और फुसफुसाहट
अचानक गायब हो जाती हैं।

लोग आखिर चाहते क्या हैं,
यह शायद उन्हें भी नहीं मालूम।
वे तो बस अफवाहों का रस लेते हैं,
उस रस में अपने आपको
पूरी तरह सराबोर करते हैं;
और जो बाकी बचता है
उसे वातावरण में छिड़क देते हैं।

## दोस्ती

दो दिन पहले तक जिसे
बिलकुल भी नहीं जानता था
लगता है अब उसे
वर्षों से जानता हूँ।
दो दिन पहले तक जिससे
परिचय तक नहीं था
वह अब इतना सुपरिचित हो चुका है
मानो सात जन्मों का संबंध हो।

दुनिया में कुछ नहीं है इससे बेहतर
कि हम एक-दूसरे को जानें
और दोस्ती करें।
एक बार दोस्त बनाकर
जो दोस्ती तोड़ता है
या उसके लिए पश्चाताप
करता है

उसकी मजबूरियाँ चाहे जो हों
पर दोस्ती के नाम पर
है यह विश्वासघात ही।

ऐ मेरे भोले, नादान और
खूबसूरत दोस्त !
उम्मीद है तुम दोस्ती को भी
खूबसूरती से निभाओगे।
एक बार संबंध बनाकर
इसे बढ़ाओगे ही, तोड़ोगे नहीं।
यों मैं यह भी चाहता हूँ—
मेरा कोई दोस्त जहाँ भी
और जैसे भी रहे
हमेशा खुश रहे।
चाहे वह मुझसे मिले या न मिले,
उसे खुशियाँ हमेशा मिलती रहें।

## दिशा-बोध

महानगर में आकर
लोगों की दिशाएँ खो जाती हैं,
वे हो जाते हैं दिशाहीन।
पर मुझे तुम क्या मिलीं
मानो एक दिशा मिल गई।

मैं अब सब कुछ झेल लूँगा
कहीं भी किसी से भी जूझ सकूँगा,
बस तुम मुझे दिशा देती रहना।
मेरे प्रति अपने प्यार
और ममत्व को न छोड़ना।

तुम्हारे दिशा देने से
मेरी दशा सुधर जायेगी,
जिंदगी पहले जैसी
निरर्थक नही रहेगी।
उसमें नित नये अर्थ खुलेंगे
दिशाएँ खुपेंगी नही—
बल्कि वे नये-नये
रास्तों पर ले जायेंगी।

## मन मेरा

मन मेरा ऐसा पहले कभी नही हुआ
जैसा आजकल होता जा रहा है।

मन की जो हालत इस समय है
वह पहले कभी नही थी;
चाहता हूँ मन को बदल लूँ फिर से
पर शायद अब यह मेरे वश की बात नही रही।

मन मेरा अब मेरा ही कहा नही मानता
वह तुम्हारा कहा शायद मान जाये,
तुम उसे समझाकर देख लो एक दिन
कहीं ऐसा न हो—
बिगड़े बच्चे को तरह
वह बिल्कुल ही हाथ से निकल जाए।

मन ही नही होगा
तो खाली शरीर का मैं क्या करूँगा ?
बिना मन के शरीर
और शव में क्या कोई भेद होता है ?

## जादूगर

मैं कोई जादूगर नहीं हूँ
पर इतना जादू अवश्य जानता हूँ
कि तुम्हें छूकर
तुम्हारे अतीत को तुमसे
अलग कर दूँ।

जितनी देर तुम मेरे संपर्क में रहोगी,
तुम्हारा अतीत तुमसे दूर रहेगा।
वह तुम पर हावी नहीं होगा,
और तुम केवल वर्तमान मे जियोगी।

मैं कोई जादूगर नहीं हूँ
पर इतना जादू अवश्य जानता हूँ,
कि तुम्हें छूकर
तुम्हारे दुखों को छूमंतर कर दूँ!

## सर्वव्यापी तुम!

धर्म के पंडों ने कहा था—
ईश्वर सर्वव्यापी है!
लेकिन मुझे तो वह
कही भी न मिल पाया
अभी तक।

ईश्वर सर्वव्यापी है,
यह मत विवादास्पद है
और संदेहास्पद भी।
लेकिन इसमें मुझे अब
तनिक सदेह नहीं
कि ईश्वर न सही,

पर तुम सर्वव्यापी हो—
कम-से-कम मेरे लिए।

मैं तुम्हें आजकल
हर चेहरे में देखता हूँ
रास्ते के हर मोड़ पर
तुम्हें खड़ा पाता हूँ
तुमसे अपना कोई भेद
मैं छिपा भी नहीं सकता।
हर प्रकार के आचरण,
मन के सभी विचारों
और विकारों तक को
मैं तुम्हारे सामने
निस्संकोच प्रगट कर देता हूँ।

सर्वव्यापी तुम !
आजकल ईश्वर बन गई हो
कम-से-कम मेरे लिए।

## कविता क्या होती है

अब तक,
बिना यह जाने-समझे
कि कविता क्या होती है
मैं लिखता रहा अनेक
कविताएँ।
आज, मैं तुम्हें जानकर
वास्तव में समझ पाया हूँ
कि कविता क्या होती है !
अब मुझे अपनी सारी कविताएँ

अधूरी और एकांगी लगने
लगी हैं।

अपनी लिखी कविताएँ
बार-बार पढ़ने से
जो शांति मुझे मिलती थी
उससे अधिक शांति और संतोष
मुझे तुम्हें पढने और समझने
पर मिलता है,
क्योंकि तुम एक 'पूर्ण कविता' हो।
स्वयं विधाता ने तुम्हे
पूरे संयम और मनोयोग से
रचा होगा।

## तुम एक कविता हो

तुम स्वयं एक कविता हो
सौंदर्य और अर्थ से ओत-प्रोत !
मैं अब दूसरी कविताएँ
पढ़कर क्या करूँगा,
वे तो प्राय: मरी हुई होती हैं।
मैं तो तुम्हें पढूंगा और समझूंगा—
एक जीवित कविता को।

मैं अब स्वयं नही लिखूंगा
कविताएँ।
व्यर्थ में समय नष्ट करना है,
कविता लिखना।
समय का मैं सदुपयोग करूँगा;
अधूरी और एकांगी कविताएँ
लिखने के बजाय

वे सभी तो पूरे नहीं होंगे
यह मुझे मालूम है।
लेकिन फिर भी मैं इंतजार
आने वाले कल का कर रहा हूँ।

सच, आने वाले कल के
स्वागत के लिए
मैं पलकें बिछाए बैठा हूँ
कि वह आये तो सही।
फिर वह चाहे आकर
मेरी पलकें ही रौंद डाले
मेरे सपनों को ही चूर-चूर कर दे
पर वह आये तो सही।

## शांति

तुमसे मिलने के बाद
मन एकदम शांत हो जाता है,
वह ज्यादा उछल-कूद नहीं करता।
लेकिन जैसे ही कुछ दिन गुजरते हैं
विना मिले,
मन फिर अशांत होने लगता है।

आखिर क्या है इस मन का इलाज ?
इसे अब मैं तुम्हारे हवाले कर रहा हूँ।
उम्मीद है तुम्हारे पास हर समय
रहने से
यह शांत रहेगा
और मुझे भी शांति से रहने देगा।

## रंग

मैंने अपनी पसंद का रंग
वता दिया तुम्हें,
तुमने अपनी पसंद का
क्या कोई रंग
नहीं चुना अब तक ?
इतनी 'रंगहीन' तो
नही हो तुम !

## रचनात्मक इच्छा

तुम्हारे प्रति मेरे मन में
अब इतनी ममता
उत्पन्न हो गई है
इतना ज्यादा मोह
जाग गया है,
कि मैं तुम्हारे माध्यम से
अपनी कुछ रचनात्मक इच्छाएँ,
करना चाहता हूँ पूरी।

मैं बनाना चाहता हूँ
एक ऐसी नारी-मूर्ति
तुम्हारी काया से,
जिसका अपना
अलग व्यक्तित्व हो।
जगाना चाहता हूँ
कुछ ऐसे भाव
तुम्हारे हृदय मे
जिनमे गरिमा हो,
आत्मसम्मान हो—
आत्मनिर्भरता का प्रयास हो।

तुम्हारे मन के छिपे कोनों में
जो तरह-तरह के हीन भाव
जाने कब से घेरा डाले
बैठे हैं,
उन्हें भी अब मैं
बाहर कर देना चाहता हूँ।
कारण, मैं नही चाहता
वहाँ अब किसी प्रकार की
निकृष्टता शेष रहने पाए।

## स्वर्गीय संदेश

क्या हमारे मिलन का सुयोग
या संयोग
अब स्वर्ग में ही होगा ?
(इस धरती पर नहीं ?)
अगर ऐसा ही हो इरादा
तो मैं उसके लिए भी तैयारी कर लूं।
वियोग में तड़पते हुए
जीते-जी मरने से
बेहतर है
एक बार मरकर ही
पूरी तरह जी जाऊँ।

## यात्रा-संस्मरण

'टू डाउन' हावड़ा मेल में
दिल्ली से हजारीबाग जाते समय
मैं देख रहा हूँ—
अपने साथ बैठी एक साँवली स्त्री को।
उसका पति
सो रहा है ऊपर की बर्थ पर।
स्त्री मुझसे बातें करने लगी है—
अपने घर की बातें
घरेलू सुख-दुख की बातें।
मुझे याद आने लगी हैं, सुनते-सुनते
तुम्हारे साथ होती बातें।
और उन बातों के साथ
तुम्हारा चेहरा, तुम्हारा सुख-दुख;
यद्यपि तुम्हारे चेहरे और उसके चेहरे

तुम्हारे सुख-दुख और उसके सुख-दुख में
कोई बहुत ज्यादा साम्य नहीं है।

बिहार सरकार रोडवेज की 'ऐक्सप्रेस बस' में
मैं हजारीबाग से धनबाद जा रहा हूँ।
रास्ते में दिखाई दे रहे हैं—
आदिवासियों के घर
हर घर के सामने खड़ी है—
कोई काली-सी औरत
मानो किसी की प्रतीक्षा में रत।
उन औरतों के रंग-रूप
और तुम्हारे रंग-रूप में
यद्यपि तनिक भी समानता नहीं है
और न तुम उनकी तरह
घर के दरवाजे पर खड़ी
मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी।
पर उन्हें देखकर मुझे
आने लगी है तुम्हारी याद इसलिए,
क्योंकि घर के दरवाजे पर न सही
पर तुम मन के द्वार पर तो
मेरा इंतज़ार कर ही रही होगी।

धनबाद से हावड़ा की यात्रा
मैं 'ब्लैक डाइमंड ऐक्सप्रेस' में
कर रहा हूँ।
उसमें सामने की सीट पर
बैठी है एक सुन्दरी
नई-नई शादी हुई है उसकी
उसका पति भी उसके साथ है,
जो धीमे-धीमे उसके कान में
फुसफुसा रहा है
न मालूम कौन-सी बातें कर रहा है।

वे बातें यों हमारी बातों से
अलग ही होंगी।
पर उनकी इस तरह की
कानाफूसी देख-सुनकर
मुझे फिर तेजी से तुम्हारी
आने लगी है याद।
शायद इसलिए
क्योंकि तुम भी उसी की तरह
सुन्दर हो।
और जब तुम मुझसे
पूरी तन्मयता के साथ
बातें करती हो
तो उससे भी अधिक सुन्दर लगती हो।

## चुनाव

कुछ चीजों का चुनाव अपने वश में नहीं होता
जैसे अपने माता-पिता का चुनाव
या अपनी मौत के समय का चुनाव।
इसी तरह,
अपने 'प्यार के अवलम्ब' का चुनाव भी,
व्यक्ति बहुत सोच-समझकर
नहीं करता;
वह बहुत कुछ संयोगों पर
निर्भर करता है।

और जैसे कोई अपने माता-पिता को
बदल नहीं सकता,
अपनी मौत के लिए नियत ढंग में
परिवर्तन नहीं कर सकता;

उसी प्रकार,
वह अपने चारों ओर की
हर चीज चाहे बदल ले
नौकरी, संगी-साथी, मित्र
और संबंधी,
यहाँ तक कि जीवन-साथी भी
पर 'प्यार के अवलम्ब' को
चाहकर भी बदल नहीं सकता !

## प्यार के आर-पार

प्यार के आर-पार कभी
देखा है तुमने ?
यों ही कभी
सोचा है तुमने
कि प्यार के इस पार
क्या है,
और उस पार क्या है ?

प्यार के इस पार है :
आसक्ति,
उस पार :
वासना ।
ये आसक्ति और
वासना जैसी पड़ोसिनें ही हैं,
जिनके कारण प्यार
सरस बनता है ।
वरना प्यार भी
अकेले आदमी की तरह
नीरस रह जाये !

## यात्रा

आज मैं तुम्हें
एक नई यात्रा पर ले जा रहा हूँ
एक नई शुरुआत के लिए ।

हर यात्रा का
अपना एक आनंद होता है
पर साथ ही मन में
कुछ आशंकाएँ
उथल-पुथल करती रहती हैं
कि पता नही यह यात्रा,
कैसी होगी ?
यह मंजिल तक पहुँचाएगी
या बीच में ही रुक जाएगी ?
अगर कही बीच में रुक गई
तो हम यात्रियों का क्या होगा ?
संसार हमें याद भी रखेगा
या यों ही भूल जाएगा ?

ये आशंकाएँ अपनी जगह हैं
पर यात्रा का पूरा आनंद
पाने के लिए
हमें याद रखना है
कि यात्रा में
संभावनाएँ भी कम नही हैं ।
अगर सारी सभावनाएँ
पूरी हो गईं,
तो हम दुनिया को
मनवा देंगे
कि हम सही यात्रा पर निकले थे
और हमने एक
सही शुरुआत की थी ।

## स्वप्नवाद

स्वप्न में कल तुम
बिना बुलाये ही
मेरे पास चली आईं,
आभारी हूँ बहुत।
स्वप्न में कल तुम
आते ही समर्पित हो गईं
मुझसे एकाकार हो गईं
आभारी हूँ बहुत !

लेकिन यह स्वप्न
सच भी कभी होगा ?
यथार्थ में जब तुम
इसी प्रकार बिना बुलाये
चली आओगी मेरे पास,
आते ही समर्पित हो जाओगी—
मुझसे एकाकार हो जाओगी,
आभारी होऊँगा तब मैं
और भी बहुत-बहुत !

## एकाधिकार

आँखें खुली रखने पर तो
सामने होती ही हो,
लेकिन बन्द करने पर भी
सामने से नहीं हटती।
इतना एकाधिकार क्यों
चाहती हो ?
कि मैं और कुछ भी,
किसी को भी, देख ही न सकूँ !

## आपत्ति क्यों होती है ?

मैं एक शुद्ध शाकाहारी व्यक्ति था
अत: मांस और मांसलता से
दूर ही रहा था।

तुम्हारे प्रोत्साहन से अब यदि मैं
मांसाहारी बन गया हूँ
और मांसलता को भी चाहने लगा हूँ
तो दोष तुम्हारा है—
मेरा नहीं।

तुम्ही तो बताया करती थीं मुझे
मांसाहार के फायदे
और तुम्हीं ने पैदा किया मुझमें
मांसलता के प्रति अनुराग
वरना मैं तो एक सीधा-सा आदमी था
सुरा और सुन्दरी से दूर रहने वाला।

वह तुम्हीं तो हो
जिसने अपनी आँखों से
सुरा पिलाई है मुझे
और अपने सौंदर्य से
कर दिया है अभिभूत।
और अब, जब मैं
चाहने लगा हूँ—
तुम्हारी हड्डियों तक को,
तो तुम्हें
आपत्ति क्यों होती है ?

## परिस्थितियाँ

परिस्थितियाँ विपरीत हैं
तो क्या हुआ
हम तो एक-दूसरे के
विपरीत नहीं हैं।
हाँ, अगर परिस्थितियों से
हार मानकर
हम स्वय एक-दूसरे के
विपरीत हो गए,
तो परिस्थितियाँ अनुकूल
होने पर भी
हमें लाभ क्या होगा ?
हम तो तब तक पूरी तरह
दो विपरीत ध्रुव बन चुके होंगे।

## चाहना

यह जानते हुए भी
कि जिसे चाहो
वह नहीं मिलता,
चाहना कम नहीं होता।
उसी तरह, जिस तरह
यह जानते हुए
कि मौत अवश्यंभावी है,
जीना कम नहीं होता।

और मुझे
जिंदगी की वर्तमान यातनाओं से
दिला देती है मुक्ति ।

## आतंक

मरने वाले आदमी की
जीवन के प्रति आसक्ति
कुछ ज्यादा बढ जाती है ।
लगभग यही हाल मेरा
हो रहा है—
मैं नहीं चाहता फ़िलहाल मरना
जीवन को कुछ दिन अभी
और जीना चाहता हूँ ।

पर मृत्यु मेरे द्वार पर
खड़ी कर रही है प्रतीक्षा—
न जाने किस घडी
उसका क्रूर हाथ
मेरे सीने पर होगा
और मैं रह जाऊँगा तड़पता ।
मेरे दिल की धड़कन
बन्द हो जायेगी अकस्मात
क्या सदा के लिए ?

## प्यार—एक पौधा

प्यार के इस कोमल पौधे को हमने
अपनी आँखों के खारे पानी से
सींचा है,

बहुत इच्छा है
तुम्हें कैमरे की आँख से देखूं
ताकि तुममें जो कुछ भी सुन्दर है
उसे अभी से आगे के लिए संजो लूं ।

## फ़ासला

जिंदगी और मौत के बीच
है केवल एक 'न' का फ़ासला।
क्योंकि
तुम्हारा मिलना मेरी जिंदगी है
और
न मिलना मेरी मौत !

## भुगतान

क्या तुम्हारी
मर्यादाएँ और नैतिकताएं
मेरी जिंदगी से भी बहुमूल्य हैं ?
यदि हैं तो ठीक है
मैं अपनी जिंदगी की कीमत
देकर भी
उन्हें तुम्हारे पास
सुरक्षित बनाये रखूंगा।

## यही क्या कुछ कम है

आज मन अपेक्षाकृत शांत है।
मैंने अपनी बात कह दी
तुमने सुन ली, और समझ भी ली
यही क्या कुछ कम है ?

प्यारे साथी !
तुमने मेरी बातें सुनकर
मुझे हिम्मत बँधाई है
आश्वासन भी दिए हैं।
डूबते को तिनके का
सहारा चाहिए,
तुम मेरा सहारा बनने को
प्रस्तुत हुए—
यही क्या कुछ कम है ?

बातों का यही क्रम
यों ही चलता रहेगा
भविष्य में भी,
सुनते रहोगे तुम
बोलता रहूँगा मैं
आगे भी इसी तरह—
यही क्या कुछ कम है ?

## समय साक्षी है

समय को कोसने की
आदत नहीं है मेरी
पर कभी-कभी लगता है

अगर हम तुम
कुछ समय पहले मिले होते
दुनिया की शक्ल कुछ और आज होती।

दुनिया तुम्हारे लिए कुछ ज्यादा रंगीन होती
और मेरे लिए अधिक सार्थक
काश ! अगर हम तुम
कुछ वर्ष पहले मिले होते।

समय बीत जाता है
उसकी बस यादें रह जाती हैं
यह समय भी कल बीत जायेगा
तो हम याद किया करेंगे—
हम दोनों को मिलने का समय तो मिला,
पर हम समय से न मिल पाये।
थोड़े समय में बहुत-कुछ किया हमने
पर उतना नहीं
जितना तब कर पाते,
जब हम कुछ समय पहले मिले होते।

## संबंधों का बरगद

बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं
जो लिखी ही नही जा सकती;
क्योंकि उन्हे लिखने लायक शब्द
किसी भी लेखक के पास नहीं होते।

मेरे तुम्हारे बीच भी
जो एक छोटा-सा संबंध था
वह इतना बड़ा और विस्तृत हो गया है
कि कलम की नन्ही-सी नोक से
उसका रेखांकन संभव नहीं हो रहा।

विकसित होते संबंधों का
यह सिलसिला,
कभी किसी दिन
इतना विकसित तो नहीं हो जायेगा,
कि दूसरे अनेक छोटे-बड़े संबध
इसके सामने बौने लगने लगे ?
और मेरे तुम्हारे संबधों का बरगद
अपनी छाँव में उन्हें समेट ले।

तुम्हें ऐसी स्थिति से
किसी प्रकार का भय नही होगा ?
अगर हो, तो अभी से तुम
इस बरगद की जड़ों पर
कुठाराघात शुरू कर दो।

लेकिन इतना याद रखो—
कि बरगद के न रहने पर
तुम्हें उसकी छाँव भी
जिंदगी-भर नसीब नही होगी
और तुम छोटे-छोटे संबंधों के
पेड़ों की छाँव मे
लू के थपेड़े खाती रहोगी।

## ईर्ष्या

हमने अगर एक दूसरे को चाहा है
तो क्या कोई गुनाह किया है ?
फिर लोगों को जलन क्यों होती है ?

हमने किसी से कुछ लिया तो नही है
न उनसे आगे कुछ माँगने का इरादा है
फिर भी उन्हें कुढन क्यों होती है ?

हम खुद समझदार हैं,
जो भी करेंगे, सोच-समझकर करेंगे
फिर लोग क्यों चाहते हैं
कि उनसे पूछकर हर काम करें
उनसे पूछकर खायें-पियें
उनसे पूछकर हँसे, गायें या रोये।
क्या उनकी यह अनधिकार चेष्टा नहीं है ?
आखिर उन्हें तपन क्यों होती है ?

## क्या यही होता है ?

रात में नींद टूट-टूट जाती है,
तुम्हारे साथ भी क्या यही होता है ?

चाहें जहाँ बैठा होऊँ
किसी से बात कर रहा होऊँ
तुम्हारी बातें याद आने लगती हैं,
तुम्हारे साथ भी क्या यही होता है ?

किसी की तस्वीर देखता हूँ
तुम्हारी तस्वीर आँखों में छा जाती है
कोशिश करने पर भी दूर नहीं हो पाती,
तुम्हारे साथ भी क्या यही होता है ?

मन होता है तुमसे सटकर बैठूं
इतने सटकर कि बीच में हवा भी न रहे।
केवल हम दोनों की साँसें आपस में टकरायें,
क्या तुम्हारा भी मन,
यही कुछ करने का होता है ?

## एक रोग

प्रेम का यह रोग
दिल पर भारी दबाव
डालता है,

यह बढ़ा देता है
दिल की धड़कन
और उड़ा देना
रातों की नींद।
रोगी को इस रोग में
किसी तरह भी
चैन नहीं पड़ता
न वह जागते हुए
जागता है,

न सोते हुए
सो पाता है।

## सिग्नलिंग

कल तुमने 'ग्रीन सिग्नल' दिया था
जिसका अर्थ था, आगे बढ़ो।
आज 'रेड सिग्नल' सामने है
जिसका अर्थ है—ठहरो।
ठहर कर अब मुझे देखना है
दूसरी ओर से कोई ऐसा
तेज़ ट्राफिक तो नहीं आ रहा
जिसकी चपेट में मैं आ जाऊँ।
और किसी भयंकर दुर्घटना का
शिकार हो जाऊँ।

मैं कृतज्ञ हूँ तुम्हारा
तुमने मुझे दुर्घटना के प्रति
सावधान किया है,
तुम्हारे संकेतों से मुझे
एक प्रकार का जीवन-दान मिला है।
लेकिन ऐसे जीवन का भी
मैं क्या करूँगा ?
जिसमें तुम एक जगह स्थिर होकर
केवल सिग्नल दोगी,
और मैं जाने-अनजाने रास्तों पर
भटका करूँगा।

## धरोहर

तुमसे मिलने की संभावना मात्र से
मन को खुशी क्यों होती है ?
इतनी ज्यादा खुशी
कि वह सँभाले नहीं सँभलती,
और चेहरे पर झलकने लगती है,

पर यही खुशी मेरी धरोहर है,
इसे मैं एक कंजूस की तरह
सँभालकर रखूँगा।
उम्र भर उसे खर्च नहीं करूँगा,
उसका जो ब्याज मुझे मिलेगा
उसी से अपना काम चलाऊँगा।

## संकेत की प्रतीक्षा

तुम्हारा मुझसे कभी भी
कोई अहित नहीं होगा

तुम जैसा और जितना चाहोगी
उतना ही मैं आगे बढ़ूँगा।

मैं तुम्हारे संकेतों की प्रतीक्षा करूँगा
क्योंकि बिना संकेतों के तो
फौज भी आगे नहीं बढ़ती
जो कि युद्ध पर जाती है।

मैं तो तुम्हारे साथ
युद्ध नहीं, शांति संधि पर
हस्ताक्षर करने आया हूँ।
मैं नफरत का नहीं
प्यार का संदेश लाया हूँ।

तुमने मुझे रोक दिया
तो मैं दरवाज़े पर ही खड़ा रहूँगा।
और तब तक करूँगा प्रतीक्षा,
जब तक तुम,
भीतर आने का इशारा नहीं करतीं।

## आज मिलेंगे

आज जब मिलेंगे
तो क्या बातें करेंगे?
यों बातें तो बहुत हैं करने को
पर जब वास्तव में मिलेंगे—
तो शायद कोई बात नहीं कर पाएँगे,
बस एक-दूसरे में खोये रह जाएँगे।

## आगे की यात्रा

हम आगे बढ़ रहे थे
दुनिया पीछे छूट रही थी।

रास्ते में हमारे
यों कई रुकावटें थीं
आँधी, तूफ़ान और
भूकम्प की संभावनाएँ थीं।
लेकिन हम आगे बढ रहे थे
क्योंकि हमें आगे बढना था,
और दुनिया को जवाब देना था।

हम रुकावटों से नहीं डरते,
छोटी-बड़ी बाधाओं को
कुछ नहीं समझते।
हमें अभी और आगे बढना है,
अपना भविष्य बनाने के लिए।
अगर आगे नहीं बढ़ेंगे,
तो भविष्य नष्ट हो जायेगा;
और दुनिया आगे निकल जायेगी।

...

## कभी प्यार किया है ?

अब तक,
प्यार करने वाले तुम्हें
कई मिले होंगे
पर क्या तुमने भी किसी को
कभी प्यार किया है ?

व्यक्ति जब प्यार करता है
तभी वह जान पाता है

कि प्यार क्या होता है ?
प्यार पाते रहने पर
वह केवल यह जान पाता है
कि उसे कोई प्यार करता है।

प्यार करने और पाने का
अंतर जानने के लिए
प्यार करना भी ज़रूरी है
और प्यार पाना भी।
किसी के लिए दिन-रात
बेचैन होना भी ज़रूरी है
और उसे बेचैन करना भी
उतना ही ज़रूरी है।
प्यार तभी सफल होगा
अन्यथा वह
असफल और एकपक्षीय रह जायेगा।

## आंतरिक द्वंद्व

तुम्हारी सीमाओं से मैं परिचित हूँ
अपनी से भी अनजान नहीं हूँ
पर क्या हमें इन्हीं सीमाओं में
जीना होगा—
आजीवन ?

बंधनों का जीवन भी कोई जीवन है ?
हमसे तो पशु-पक्षी ही अच्छे हैं
जिन्हें विचरने के लिए
खुला आकाश तो है।

अपने मन का मैं करूं क्या ?
यह किसी भी प्रकार के
बंधनों को स्वीकारना
नहीं चाहता;
पर करना ही होगा स्वीकार
क्योंकि तुम्हारी मित्रता को मैंने
तुम्हारी 'सीमाओं के साथ'
स्वीकारने का वचन दिया है।

## अनोखा एकांत

कुछ दिनों से तुम
दिन-रात साथ रहती हो।
और एकांत मिलते ही
करने लगती हो वे सारी बातें
और हरकतें
जिनसे पहले तुम
परहेज़ किया करती थी।

विधि का विधान—
मनुष्य चाहता कुछ है
पर होता कुछ और है।

तुम भी नहीं चाहती थीं
मेरा साथ इतना ज्यादा
या एकांत में मिलना
पर तुम्हारे या मेरे
चाहे बगैर
होता अक्सर यह है
कि आधी रात के बाद

मैं कमरे से
बाहर निकल आता हूँ
और तुम्हें पुकारकर
किसी 'कोजी कार्नर' में
सामने बिठाकर
घंटों बतियाता हूँ।

## समुद्र और तुम-१

कल सागर किनारे तुम मेरे साथ थीं
या सागर मेरे साथ था
यह मैं न समझ पाया।

कल जब सागर किनारे तुम मेरे साथ थीं
सागर थोड़ा गुस्से में था
या तुम थोड़ा गुस्से में थीं
यह मैं अब तक न समझ पाया।

फिर सागर थोड़ा शांत हुआ था
और तुम भी थोड़ा संतुलित हुई थीं
पर भीतर से कौन अधिक बेचैन था
यह मैं न अब तक समझ पाया।

## यादगार तारीख

कल की तारीख यादगार तारीख थी
क्योंकि तुमने उसमें अपनी यादें भर दीं,
ऐसी यादें जो जीवन-भर याद रहेंगी।

यह बात दूसरी है कि उन यादों में
मिठास है तो थोड़ी खटास भी है,
इतना ही नहीं—
उनमें थोड़ी तेज़ी और चरपराहट भी है।
लेकिन जीवन भी तो ऐसा ही है
कहीं मीठा, कहीं खट्टा,
और कहीं तेज और चरपरा।

इसलिए मुझे कोई शिकायत भी नहीं है तुमसे
कि तुमने अपनी यादों से
इस यादगार तारीख में
मिठास, खटास, तेज़ी और चरपराहट
एक साथ क्यों दे दी!

## तुम अगर साथ दो

तुम अगर साथ दो
तो मैं कई मोर्चों पर
लड़ सकता हूँ एक साथ!

मैंने तुम्हें प्यार करना सिखलाया है,
तुम मुझसे बस इतना वादा कर दो—
कि तुम कभी निराश नहीं होओगी
और न मुझे निराश करोगी।
हर निराशा में आशा की जो
एक किरण होती है—
तुम उसी को देखने और पकड़ने की
कोशिश करोगी।

मैंने तुम्हें अपना बनाया है
तो बस इतना वादा कर दो
कि मुझे कभी ग़ैर नहीं समझोगी।

मन में जो बात आयेगी—
अच्छी या बुरी
वह चाहे मेरे पक्ष में हो या विपक्ष में
तुम मेरे सामने उसे निस्संकोच
साफ़-साफ कह दोगी।

तुम्हारे साथ कई मोर्चों पर
लड़ने के लिए
तुम्हारे यही वादे मेरे हथियार होंगे
और मैं इन्हीं के बल पर
किसी न किसी दिन
तुम्हारे जीवन को खुशियों से
भर दूंगा,
लबालब।

## बीहड़ रास्ता

मेरा तुम्हारा संबंध अब
संबंध नहीं रह गया है
वह हमारा धर्म बन चुका है।
बहुत चाहा था
इस धर्म-कर्म के पचड़े में
न पड़ें हम
पर अंततः सफल न हो सके।

हमें रोमांच रहेगा जिंदगी भर
कि जिस रास्ते से हम
जाना नहीं चाहते थे
उसी रास्ते पर हमें चलना पड़ा।

प्यार के धर्म का वह रास्ता
इतना बीहड़ और ऊबड़-खाबड़ है
कि चलने वाले गिर-गिर पड़ते हैं।
पर गिरकर वे फिर उठते हैं
और उठकर आगे बढ़ते हैं,
बिना इस बात की परवाह किए
कि वे मंजिल तक
पहुंच भी पायेंगे या नहीं ?

मेरा तुम्हारा अनुबंध अब
अनुबंध नहीं रह गया है
वह एक नियम बन चुका है।

## आश्चर्य

आश्चर्य है !
कच्चे धागे क्यों इतना
कस जाते हैं—
जिन्हें हम दूर रखना चाहते हैं
वे ही मन में बस जाते हैं।

जिनसे कोई संबंध नहीं होता
उनके हृदय की धड़कनें
अपने हृदय में
सुनाई देने लगती हैं;
उन्ही की सांसें
अपनी सांसों में इस तरह
मिल जाती हैं
कि अलग से पहचानी नहीं जातीं।

कैसा आश्चर्य है !
साँसों का यह आदान-प्रदान
बिना शारीरिक निकटता के भी
नियमित जारी रहता है;
हम जितना उसके 'इन्फ़ेक्शन' से
बचना चाहते हैं,
उतना ही वह हमें
चारों ओर से जकड़ लेता है।

## एक और आश्चर्य

कपोल से कपोल नहीं मिले,
अधरों पर अधर नहीं रखे।
कहने को हमने एक
नियत दूरी भी रखी
फिर भी साँसों से साँसें
ऐसी टकराईं—
कि तेरा जुकाम
मुझे लग गया !

## तुम्हारे संपर्क में

**स्त्री :**

तुम्हारे संपर्क में
यह क्या होता जा रहा है ?
मैं रोज अपने लिए
सीमाएँ निर्धारित करती हूँ

दूसरे दिन तुम
उन सीमाओं को
कुछ और विस्तृत कर देते हो।

बढ़ते-बढ़ते सीमाओं का
यह विस्तार,
कहीं इतना विस्तृत न हो जाए
कि सारी सीमाएं टूट जाएं।
और मैं तुम्हारे साथ मिलकर
निस्सीम न बन जाऊं।

पुरुष :
तुम्हारे संपर्क में
दिनोंदिन यह क्या होता जा रहा है ?
मैं अपने आपको भूलता ही जा रहा हूं
प्रतिदिन,
याद नहीं रहता मुझको कुछ भी
अपने बारे में।
याद केवल रहती हैं तुम्हारी बातें
तुम्हारी अदाएं और विशेष मुद्राएं।

मैं इतना भावुक भी नहीं था,
पर तुम्हारे संपर्क में
मैं दिनोंदिन भावुक होता जा रहा हूं,
भूलता जा रहा हूं अपने लक्ष्य।
याद केवल रहती हैं तुम्हारी इच्छाएं
तुम्हारी आकांक्षाएं और आवश्यकताएं।

ऐसे संपर्क का अंत क्या होगा आखिर ?
मुझे इस प्रश्न के उत्तर में
बिलकुल रुचि नहीं।
मैं 'अंत' में नहीं, 'आरम्भ' में
विश्वास करता हूं।

आरंभ जब हुआ है, तो अंत भी
कुछ न कुछ होगा ही
फ़िलहाल मैं उसकी बात ही
सोचना नहीं चाहता।

मैं तो केवल चाहता हूँ—
तुम्हारी बात करना,
या तुमसे बात करना,
या तुम्हारे बारे में सोचना
इतना सोचना कि मैं
अपने अस्तित्व को ही भूल जाऊँ
और तुममें इस तरह समा जाऊँ
कि 'मैं-तुम' दो न रहें
वे एकमेक हो जाएँ

संतोष

## सच्ची बात

झूठी प्रशंसा मुझे भाती नहीं
और सच्ची प्रशंसा करने या
सच्ची बात कहने से
स्वयं को रोक नहीं पाता ।
तुम्हें अगर प्रशंसा न भाती हो
तो यह समझ लिया करो
कि मैं तुम्हारे बहाने
स्वयं अपनी प्रशंसा करता हूँ ।

## वक़्त की रफ़्तार

मैं तो तुम्हें वायुमार्ग से
दुनिया दिखाना चाहता हूँ,
लेकिन तुम्हें हवाई जहाज की
आवाज तक से डर लगता है ।
क्या तुम्हें बैलगाड़ी की चाल ही
अधिक अनुकूल लगती है ?

महानगरों में मोटरें भी
सौ किलोमीटर की गति से दौड़ती हैं,
जीवन की आज की तेज गति से
संगति बिठाने के लिए ।

वहाँ बिजली की रेलगाड़ियाँ हैं
जो प्लेटफ़ार्म पर आधा मिनट रुकती हैं;
फिर तुरंत चल देती हैं
ब्रह्ममुहूर्त्त से रात के तीसरे पहर तक
बसें भी इधर से उधर तक
अविराम दौड़ती रहती हैं।

अब बोलो तुम्हें क्या पसंद है—
किसी गाँव की बैलगाड़ी में
हिचकोले खाते रहना ?
या द्रुतगति के वाहनों में बैठकर
जल्दी-से-जल्दी मंज़िल तक पहुँचना ?

## फूल और सुगंध

फूल में सुगंध होगी तो
वातावरण को सुरभित करेगी ही,
फूल चाहकर भी
अपनी सुगंध को
अपने तक सीमित नहीं कर सकता।

तुम भी अपनी फूल जैसी
ताज़ी युवा देह की सुगंध से
वातावरण को वंचित नहीं कर सकती।
बस केवल यह कर सकती हो
कि वह देह
मनोवांछित व्यक्ति के ही
गले का हार बने !

## क्यों ?

प्यार को स्वीकार करके
प्यार करने वाले को
अपनाने में हिचकती क्यों हो ?
आखिर तुम इतना डरती क्यों हो ?

प्यार करने में कोई पाप नहीं होता।
लगभग हर प्रसिद्ध व्यक्ति ने
किसी-न-किसी से प्यार किया है।
या कि यह भी हो सकता है
कि प्यार का उचित अवलम्ब पाकर ही
वह व्यक्ति उन्नति कर सका हो
प्रसिद्धि के शिखर पर
चढ़ सका हो।

पर तुम प्यार को
अंगीकार करके भी
प्रिय को अंगीकार करने में
इतना सकुचाती क्यों हो ?
आखिर तुम इतना डरती क्यों हो ?

## 'शाक'

कल तुम्हें छूने मात्र से
मुझे जो 'शाक' लगा है,
उसका इलाज क्या है ?

इलाज अगर न हो—
मानो मर्ज़ अगर लाइलाज हो,
तो इतना अनुरोध

स्वीकार करना—
तुम कुछ और 'शाक'
ऐसे ही दे देना,
ताकि मैं तुम्हारे सामने ही
पूर्णतः जड हो जाऊँ।

तुमसे दूर होकर
जीवित रहने के बजाय
मैं तुम्हारे स्पर्श से
मरना अधिक पसंद करूँगा।

## तुलना

मैं जो
झुका नही कभी
किसी के आगे भी—
यहाँ तक कि
ईश्वर के भी !
आज पूर्णतः नत हूँ
केवल तेरे आगे,
और कर रहा हूँ—
करबद्ध याचना
केवल तेरे आगे।

## खुद-ब-खुद

मुझसे कोई भूल हुई हो
तो माफ कर देना !
मैं करता क्या,

मेरा अनुरागी मन
कल तुम्हें देखते ही
डोल गया था !
लाख चाहा था
मन पर संयम रखूं,
पर मेरे चाहने मात्र से
होना क्या था ?
स्वयं मेरे हाथ ने
मेरा कहा न माना
वह खुद-ब-खुद
तुम्हारी ओर बढ गया था ।

## अमृत की खोज

मैं तो पहले ही कहता था—
तेरे होंठों में अमृत है,
पर तू नही मानती थी ।
अब तूने स्वयं देख लिया
कि मैं जो मृत्यु की प्रतीक्षा
में दिन गिन रहा था,
तेरे होंठों से अमृत चखकर ही
नया जीवन पा गया हूँ ।

अरे ओ अमृता !
अब इस जीवन में मुझे
छोड न देना,
नही तो मैं फिर
मरणासन्न हो जाऊंगा ।
और ऐसी हालत में मुझे
कहां ढूंढना फिरेगा ?

## एक व्यक्तिगत कविता

तुम्हारे होंठों को कल जब मैंने चूमा,
मुझे उनका स्वाद बेहद मीठा लगा था।
उसी समय जब मैंने तुम्हारी आँखों को चूमा
मुझे उनका स्वाद नमकीन-जैसा,
　　　　प्रतीत हुआ था।

तुम्हारे चुंबनों का स्वाद
कहीं पर मीठा और कहीं नमकीन है!
लेकिन मुझे मीठा भी पसंद है और नमकीन भी,
इसलिए मैं तुम्हें चूमूँगा बार-बार!
शरीर के हर अंग पर तुम्हारे,
　　　　मेरे चुंबनों के निशान होंगे।

## एक और व्यक्तिगत कविता

मैं तेरी आँखों के
सारे आँसू पी लूँगा,
चाहे उनका स्वाद
मुझे खारा क्यों न लगे।
तेरे अधरों के मीठे अमृत को
चखने का अधिकार
मुझे हो न हो,
पर तेरी आँखों से निकले
　　　　आँसुओं को
अपनी जीभ से सोखने का
　　　　अधिकार
तूने ही मुझे दिया है,
मैं इस अधिकार को
नहीं छोड़ूँगा।

## झील की पिकनिक

याद रहेगी वह मनोरम झील
और उसके किनारे की पिकनिक,
याद रहेगा वहाँ झील के किनारे
घूमना और उसे बार-बार महसूसना।

याद रहेगा वहाँ का तिकोना समतल मैदान—
जिस पर छोटी-छोटी हरी घास
उगी हुई थी और उस पर हम
सिर रखकर पाँव फैलाकर लेटे थे।

याद रहेंगी झील के उस ओर की
दो छोटी पहाड़ियों की चोटियाँ
जो बहुत ही चित्ताकर्षक
प्रतीत हो रही थी।

कुल मिलाकर जीवन-भर याद रहेगी
वह मनोरम झील, वहाँ के दृश्य
और वहाँ बिताये तुम्हारे साथ के
वे आत्मीय क्षण !

## झील में नौका-विहार

किसी प्राकृतिक सुन्दर-सी साफ़ झील में
तैरने और डुबकी लगाकर नहाने का
अपना सुख है।

पर कैसी हो तुम
जो झील में नौका-विहार की
अनुमति देने तक में
सहम सहम जाती हो ?

## प्यार—एक रास्ता

प्यार का रास्ता
'त्याग' का रास्ता है,
यह तुम्हारे प्यार के बाद
जाना है।

दो उभरते-चमकते बिंदुओं को
एक सरल रेखा से मिला दो,
फिर उसके लम्बवत्
दूसरी सरल रेखा खींचो
बीचोंबीच में।

यही है प्यार का रास्ता
और यही है 'क्रास' का रास्ता,
यह तुम्हे प्यार करने के बाद
जाना है।

## संयोग के क्षण

लंबे वियोग के वाद
संयोग के दो-चार क्षण भी
वहुत होते हैं।
वे व्यक्ति को
नई स्फूर्ति से भर देते हैं।

उसी प्रकार
जैसे मरणासन्न मरीज़ पर
संजीवनी वूटी असर करती है
और मृत्यु को टाल देती है,
संयोग के क्षण भी
वियोग को टाल देते हैं
और व्यक्ति के जीवन को
जीने लायक वना देते हैं।
उसे हर्षोल्लास से
भर देते हैं।

लंबे वियोग के वाद
संयोग के दो-चार क्षण ही
वहुत होते हैं।

## शृंगार करूँ तुम्हारा

तुम्हें अपने सामने देखकर
कभी-कभी
इच्छा होती है तीव्र
अपने हाथों शृंगार करूँ
मैं तुम्हारा।
तुम्हारे माथे पर विंदी

लगाऊँ मैं
लाल 'वार्निश' से,
तुम्हारे होंठों पर
लिपस्टिक लगा दूँ मैं
लाल रंगत में ।
और फिर हाथ-पाँव के
नाखूनों पर
काली लगाऊँ मैं
लाल स्याही की,
नीली या काली स्याही का
इस्तेमाल करूँ मैं
तुम्हारी भौंहें ठीक करने में ।
फिर भी अगर
रह जाए कुछ कसर,
तो दूसरे सभी
रंगों की स्याहियों को
छिड़क दूँ मैं
तुम्हारी साड़ी और चोली पर ।
इतना करने के बाद
चाक के पाउडर को
चेहरे पर मलकर
चूम लूँ तुम्हारी
कान की लवों को ।
या लगा लूँ सीने से इस तरह
कि सारे रंग
होली के रंगों की तरह
मुझ पर भी
छोड़ दें छाप अपनी ।

## फूलों का शृंगार

फूलों-सी सदा ताजी
और नाजुक देह पर
केवल फूलों का
शृंगार मुझे रुचता है।
इसीलिए आदिवासी
समाज मुझे रुचता है।

कल्पना करो—
किसी वनकन्या की युवा देह पर
केवल फूलों के वस्त्राभूषण हों,
मानो प्रकृति और प्रकृति का
सम्मिलन हो।
प्राकृतिक परिवेश में
बस फूलों का
उपहार मुझे रुचता है,
इसीलिए आदिवासी
समाज मुझे रुचता है।

## हवस पर बहस

तुम जिसे कहती हो हवस,
वह प्यार का ही एक हिस्सा है।
जिसने कभी प्यार किया होगा
वह यह भी जानता होगा
कि प्यार कितना बेजान है
हवस के बिना।

प्यार पर की जा सकती है
परिचर्चा अगर,

तो इच्छा पर भी
की जा सकती है बहस।
पर बहस में पड़े बिना
यह मान लेना जरूरी है
प्यार भी आता है तब,
मन की इच्छा मिट जाने पर।

प्यार अगर व्यक्ति है
तो इच्छा उसकी शक्ति
प्यार अगर अमूर्त है
तो इच्छा ही उसे
मूर्त बनाती है—
जीता-जागता रूप
दिखलाती है।

## वीनस

कामशास्त्र का अध्ययन मैंने किया था
'काम' को थोड़ा बहुत समझा भी था
पर उस दिन जब मैंने 'वीनस' को देखा
तो मुझे लगा मेरा 'काम' का ज्ञान,
कितना अधूरा था,
'वीनस' को जाने बिना !

'काम' को शिव ने अशरीरी कर दिया था
पर 'वीनस' को जब मैंने देखा—
और उसके शरीर को भी देखा
तो मुझे लगा
'काम' कितना अधूरा है,
अपने शरीर के बिना।

भारतीय 'काम' और यूनानी 'वीनस'
यानी मन और तन।
उस दिन जब मैंने दोनों को
एकाकार देखा
तब मैं इस नतीजे पर पहुँचा—
संसार कितना अधूरा है
एकाकार हुए बिना।

## वीनस का वरदान

वीनस का वरदान
बहुत कम लोगों को मिल पाता है।
यह मिलता भी बड़ी मुश्किल से है
तभी जब देवी स्वयं प्रसन्न हों।

पर मैं उन भाग्यशालियों में हूँ
जिन्हें वीनस वरदान दे चुकी है।
मैंने वीनस को आँखों देखा है,
उसके शरीर को भी महसूसा है।
केवल इतना ही नहीं
मैंने वीनस के सारे शरीर को
चुंबनों से भर दिया है।

यकीन न हो तो
जब कभी वीनस तुम्हें मिले
तुम स्वयं देख लेना—
मेरे चुंबनों का एकाध निशान
उसके शरीर पर अभी भी
तुम्हें देखने को
मिल जायेगा।

## एक वास्तविकता

गुलाब के फूल की
पंखुरियों-सी तेरी देह,
और उस पर बस—
रंगीन फूलों का एक हार,
मात्र फूलों से किया शृंगार।
यह कल्पना नहीं;
कोई स्वप्न नहीं
एक वास्तविकता है।
मेरे जीवन की यथार्थता है।

## देवी का वरदान-१

मैंने जीवन में
किसी आदमी तो क्या
ईश्वर से भी
नहीं कुछ माँगा है कभी
हाँ, एक प्यार की देवी से
प्यार का वरदान माँगा था, अवश्य !
और वह मुझे मिल गया था।
सच,
कितना भाग्यशाली हूँ मैं !

## देवी का वरदान-२

मैंने जीवन में बस एक बार
एक देवी से

प्यार का वरदान माँगा था
और वह मुझे मिल गया।
इसीलिए अब कभी भी
किसी दूसरी देवी, देवता या
ईश्वर तक से
कुछ माँगने की
इच्छा ही नहीं होती।

## पूर्णिमा

'नीलिमा' के बीच
'पूर्णिमा'
जो देख लेता है
एक बार,
वह उसे भूल नहीं
सकता।
बार बार चाहता है
देखना।

## बंध-अबंध

हमारे संबंध कितने बंध हैं
और कितने अबंध
यह कानून और समाज की
समस्या है, हमारी नहीं।
स्वयं हमारी समस्या तो
मात्र इतनी है कि
यह बंध या अबंध संबंध

## एक वास्तविकता

गुलाब के फूल की
पंखुरियों-सी तेरी देह,
और उस पर बस—
रंगीन फूलों का एक हार,
मात्र फूलो से किया शृंगार।
यह कल्पना नही;
कोई स्वप्न नही
एक वास्तविकता है।
मेरे जीवन की यथार्थता है।

## देवी का वरदान-१

मैंने जीवन में
किसी आदमी तो क्या
ईश्वर से भी
नही कुछ माँगा है कभी
हाँ, एक प्यार की देवी से
प्यार का वरदान माँगा था, अवश्य !
और वह मुझे मिल गया था।
सच,
कितना भाग्यशाली हूँ मै !

## देवी का वरदान-२

मैंने जीवन में बस एक बार
एक देवी से

प्यार का वरदान माँगा था
और वह मुझे मिल गया।
इसीलिए अब कभी भी
किसी दूसरी देवी, देवता या
ईश्वर तक से
कुछ माँगने की
इच्छा ही नहीं होती।

## पूर्णिमा

'नीलिमा' के बीच
'पूर्णिमा'
जो देख लेता है
एक बार,
वह उसे भूल नही
सकता।
बार बार चाहता है
देखना।

## वैध-अवैध

हमारे संबंध कितने वैध हैं
और कितने अवैध
यह कानून और समाज की
समस्या है, हमारी नही।
स्वयं हमारी समस्या तो
मात्र इतनी है कि
यह वैध या अवैध संबंध

जैसे भी हैं, वैसे इसी प्रकार
आगे बने रह सकते हैं।

## अनुनय

नाराज न हो
मेरी सोनजुही !
वरना भेंट में दिए
ये फूल तो मुरझाएंगे ही,
तेरी देह के गुलाब भी
काले पड़ जाएंगे।

## मुक्ति—एक युक्ति

मुझसे अब नहीं सही जाती
छः इंच की भी यह दूरी,
मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूँ।
इतने पास,
कि एक मिलीमीटर का भी
अंतर न रहे।

यह क्या हो गया मुझे
जितना चाहता हूँ
मुक्त होना
मैं किन्हीं बंधनों से,
उतना और कसता जाता हूँ
मैं तुम्हारे बंधनों को।

अब तो इतना कसो
इन बंधनों को,
कि सारे बंधन टूट जायें
और हम तुम
पूर्णतः मुक्त हो जायें।

## संयोग

संयोग केवल किताबों में नहीं होते
जिंदगी में भी कई बार
ऐसे संयोग आते हैं,
कि हम बिना किसी प्रयत्न के
किसी की ओर बढ़े चले जाते हैं।

यह मात्र संयोग ही तो होता है
कि आकर्षण से पहले
वह व्यक्ति हमारा कुछ नहीं होता
पर बाद में सब कुछ बन जाता है।
क्या हम ऐसे संयोगों से
वास्तव में बच सकते हैं?

## ठोस होते हुए

संबंध जो पहले हवाई थे
धीरे-धीरे तरल हुए
अब ठोस हो गए हैं।
परिचय जो पहले औपचारिक था
क्रमशः अनौपचारिक हुआ
अब अंतरंग हो चला है।

डर है तो केवल यही
कि संबधों का यह ठोसपन
इतना सख्त न हो जाये
कि चुभने या गड़ने लगे।
और परिचय मे इतनी
अतरंगता न आ जाये,
कि एक-दूसरे के व्यक्तित्व की
भिन्नता ही समाप्त हो जाए।

## ठोस निर्णय

बिना किसी संबंध के
हम क्यों इतने संबद्ध हो गए हैं
कि संबंधों वाले संबंध
अब संबंध नही लगते।

बिना किसी स्वार्थ के
हम क्यों इतने प्रतिबद्ध हो गए हैं—
एक दूसरे के प्रति,
कि अपने-अपने स्वार्थों का
बिलकुल ही ध्यान नही रखते।

बिना किसी वचन के
हम क्यों इतने वचनबद्ध हो गए हैं—
एक दूसरे से,
कि अपने इतर वादों को हम
पूरी तरह भूल चुके हैं।
वस्तुतः हम इतने आबद्ध
हो गए हैं—

एक दूसरे में,
कि बिना कोई निर्णय किये हुए भी हम
एक ठोस निर्णय कर चुके हैं।

## शासक नहीं, सेवक

एक दिन मै भी राजा बन गया,
किसी के मन के सिंहासन पर बैठ गया।
शासन करने के लिए पूरा शरीर मिला
उसका,
और खर्च करने के लिए यौवन का
अक्षय भंडार।
मेरी सारी चिंताएँ मिट गईं
क्योंकि मैं हो गया पूर्ण संतुष्ट।

लेकिन राजा बनते ही
एक नई चिंता मुझे लग गई—
कहीं मैं ठीक से शासन न कर पाया
धन को अंधाधुंध लुटा दिया
तो क्या होगा?
मैं पदासीन करने वाले को क्या उत्तर दूंगा?
इससे तो अच्छा है:
मैं सिंहासन से उतरकर जमीन पर आ जाऊँ
और राज्य का मात्र एक सेवक बना रहूँ—
उसका शासक नहीं!

## शब्दातीत

शब्द अब छोटे पड़ने लगे हैं
उनमें जो मै कहना चाहता हूं,
वह अट नहीं पाता।

भाषा इतनी अपाहिज मुझे
पहले कभी नहीं लगी ।

क्या मैं आदिम युग में
वापस जाना चाहता हूँ ?
जहाँ दूसरे बंधनों के साथ
भाषा के भी बंधन नहीं थे ।
मनुष्य जो चाहता था
उसके बारे में कहता कुछ नहीं था—
बस कर गुजरता था ।

इच्छाएँ

## सान्निध्य

कल मैं फिर गुलाब के बगीचे में
जा पहुँचा था।
मेरे चारों ओर
गुलाब थे—गुलाबी गुलाब।

गुलाबो का गुलाबी रंग इससे पहले
इतना प्यारा मुझे कभी नहीं लगा था।
छोटे गुलाब, बडे गुलाब, गुलाब
की पंखुरियाँ और कलियाँ ही मेरे
चारों ओर छायी थीं।

मैं आश्चर्यचकित था—
गुलाब का फूल मेरे लिए इतना
सार्थक कभी नहीं लगा था
जितना कि कल!

## अंतर

चुंबन और चुंबन मे भी
फ़र्क होता है,
यह तुम्हें चूमने के बाद जाना है।

एक चुंबन
महज़ औपचारिकता है
या शरीर की आवश्यकता।
और दूसरा कामनाओं का संदेश
या भावनाओं की गरमाहट लिए;
यह तुम्हे चूमने के बाद जाना है।

क्या तुम प्यार में
दोहराव बिलकुल नहीं चाहतीं ?

मुझे तो प्यार में
'वही बात' भी
हर बार नई बात लगती है।
उसी प्रकार, जिस प्रकार
प्यार करते समय
तुम हर बार
नई मुलाकात-सी लगती हो।

प्यार में दोहराव
बिलकुल न आये
यह तभी संभव है
जब प्यार का अवलम्ब भी बदलता रहे।
पर मैं प्यार का अवलम्ब
बदलना नहीं चाहता,
या बदल नहीं सकता।
इसलिए 'वही बात' भी
तुम्ही से दोहराता हूँ।
तुम मुझे रोक क्यों देती हो ?
क्या तुम अपने प्यार में
बदलाव लाना चाहती हो ?

## प्रतिक्रिया

पूर्ण एकांत हो
बस तुम्हारा साथ हो,
ऐसे क्षण जिंदगी में
कभी-कभी ही आते हैं !
पर कितनी जल्दी बीत जाते हैं ?

एक चुंबन
कर्त्तव्य निभाने के लिए है,
और दूसरा आत्मा की शांति के लिए;
यह भी तुम्हें चूमने के बाद जाना है।

चुंबन और चुंबन में ही
फ़र्क होता है,
यह तुम्हें चूमने के बाद ही जाना है।

## एक अर्थपूर्ण कविता

तुम्हारे होंठों से मेरे होंठों पर लिखी
कविता अभी ताज़ी है।
एक दिन यह बीते दिनों की
कहानी बन जायेगी,
यानी जीवन का कोई इतिहास पृष्ठ।

लेकिन फिर भी रहेगी ताजी ही—
ऐसी ही ताजी,
जैसी कि आज और इस घड़ी है।
और मेरे जीवन को
इसी प्रकार नए अर्थ देती रहेगी,
जैसी कि आज और इस घड़ी
दे रही है।

## वही बात

मैं 'वही बात' जब
बार-बार दोहराता हूँ
तुम टोक क्यों देती हो ?

क्या तुम प्यार में
दोहराव बिलकुल नहीं चाहती ?

मुझे तो प्यार में
'वही बात' भी
हर बार नई बात लगती है।
उसी प्रकार, जिस प्रकार
प्यार करते समय
तुम हर बार
नई मुलाकात-सी लगती हो।

प्यार में दोहराव
बिलकुल न आये
यह तभी संभव है
जब प्यार का अवलम्ब भी बदलता रहे।
पर मैं प्यार का अवलम्ब
बदलना नहीं चाहता,
या बदल नही सकता।
इसलिए 'वही बात' भी
तुम्ही से दोहराता हूँ।
तुम मुझे रोक क्यों देती हो ?
क्या तुम अपने प्यार में
बदलाव लाना चाहती हो ?

## प्रतिक्रिया

पूर्ण एकात हो
बस तुम्हारा साथ हो,
ऐसे क्षण जिंदगी में
कभी-कभी ही आते हैं !
पर कितनी जल्दी बीत जाते हैं ?

सुन्दर सपनों के समान
मोहक ये क्षण,
जब भी आते हैं जिंदगी में
तो इतिहास बदलता है।
और उसे फिर से लिखने की
इच्छा होती है।

लेकिन जिंदगी मात्र मोहक नहीं है,
वह काफी वीभत्स है।
उसकी वीभत्सता हमें
दिन-रात कचोटती भी रहती है—
पैसे की जरूरतें, छोटी-बड़ी आवश्यकताएँ,
समाज और व्यवस्था के घिनौने नियंत्रण !
हम क्या करें ?
अधिक से अधिक यही कर सकते हैं—
वीभत्सता के होते हुए भी
अपने लिए दो-चार क्षण
साथ जीने के
किसी न किसी प्रकार छीन लें।
...और व्यवस्था के मुँह पर
थूकने का संतोष प्राप्त करें।

## एक वर्षांत

आज की रात
एक वर्ष बीत जाएगा
और एक नया वर्ष आएगा।
पर क्या इससे
सभी कुछ रीत जाएगा ?

नहीं, न कुछ बीतेगा
न ही रीतेगा
मात्र इतना होगा
कि जो कुछ सामने है
वह हृदय में समा जाएगा
और 'स्मृति' बन जाएगा।

आने वाले नए वर्षों में
ये स्मृतियाँ ही
हमारे जीवन को प्रेरणा देंगी
उसके लिए विकास की
नई दिशाएँ खोलेंगी।
और फिर वे वर्ष भी
इसी वर्ष की भाँति
हमारे अनुकूल बन जाएँगे (?)

## अनचाहा भविष्य

कभी खाली बैठे-बैठे
खुली खिड़की से
तुम आसमान की ओर देखने लगोगी,
तो तुम्हारी आँखें भीग जायेंगी।
रोकर जब थोडी हल्की हो लोगी
तो घर के काम में
अपने आपको खपा दोगी।

दूसरे दिन दरवाजे पर
जब किसी की पदचाप सुनोगी,
तो तुम्हें मेरा भ्रम होगा
पर वह मै नही, मेरा भ्रम ही वहाँ होगा।

उधर दूर, मै किसी कमरे में
खोया-खोया तुम्हें याद किया करूँगा
लेकिन मै भी यह जानता होऊँगा—
तुम्हारी यादे ही तब मेरी संपत्ति होंगी
स्वयं तुम नही!

## क्या भूल जाएँगे

जब हम दूर-दूर होगे
यानी एक-दूसरे को
आमने-सामने नही देख पाएँगे
तो क्या भूल जाएँगे

नही हम नहीं भूल पाएँगे,
क्योंकि हम मस्तिष्क से नहीं
हृदय से जुड़े हैं।

## अनचाहा भविष्य

कभी खाली बैठे-बैठे
खुली खिड़की से
तुम आसमान की ओर देखने लगोगी,
तो तुम्हारी आँखें भीग जायेंगी।
रोकर जब थोड़ी हल्की हो लोगी
तो घर के काम में
अपने आपको खपा दोगी।

दूसरे दिन दरवाज़े पर
जब किसी की पदचाप सुनोगी,
तो तुम्हें मेरा भ्रम होगा
पर वह मैं नहीं, मेरा भ्रम ही वहाँ होगा।

उधर दूर, मैं किसी कमरे में
खोया-खोया तुम्हें याद किया करूँगा
लेकिन मैं भी यह जानता होऊँगा—
तुम्हारी यादें ही तब मेरी संपत्ति होंगी
स्वयं तुम नहीं !

## क्या भूल जाएँगे

जब हम दूर-दूर होंगे
यानी एक-दूसरे को
आमने-सामने नहीं देख पाएँगे
तो क्या भूल जाएँगे

नहीं हम नहीं भूल पाएँगे,
क्योंकि हम मस्तिष्क से नहीं
हृदय से जुड़े हैं।

वह कहीं और चला जाता है।
और उसके संघर्ष का फल
किसी और को मिल जाता है।

सचमुच अजीब है इस दुनिया का कायदा
संघर्षशील आदमी के पास
रुकने का वक्त नहीं होता
उसे यह भी पता नहीं होता
कि कौन उसे रोकना चाह रहा है—
कौन उसे प्यार की नज़रों
से देख रहा है,
और कौन नफ़रत की ?
वह तो बस चलता चला जाता है
अपना प्यार बाँटता हुआ
प्यार करने वालों को
और नफ़रत करने वालों को भी।

लेकिन रुककर जब कभी
याद करता है
अपनी बीती ज़िंदगी
यह संघर्षशील आदमी भी,
तो उसे लगता है
कहीं न कहीं तो उसे
विश्राम करना चाहिए था।
आखिर वह भी आदमी था—
कोई मशीन तो नहीं !

## क्या सपने सच होते हैं ?

आज रात सोते-सोते
मैंने एक अजीब सपना देखा है।

तुम्हें देखता हूँ, सब कुछ समझता भी हूँ
लेकिन क्या करूँ ?
मेरे पास फ़िलहाल अपना समय
नहीं रहा।
उस पर किसी और का
अधिकार हो चुका है।

हाँ, इतना अवश्य कर सकता हूँ
तुम्हारे कंधे पर हाथ रखकर
तुम्हें एक सहेली की तरह समझाऊँ।
फिर भी अगर तुम न समझ सको
तो तुम्हें सीने से लगाकर
हौसला दूँ।

तुम रोकर थोड़ी हल्की हो लो
तो तुम्हारे कान में कह दूँ—
'समय के आगे सब समर्पित हैं,
अतः धैर्य धरो।
लेकिन एक दिन ऐसा समय भी
आ सकता है,
जब हम तुम फिर मिलेंगे
और तब हम
उस नये समय के प्रति भी
पूरी तरह समर्पित होंगे।'

## गुनाह और सज़ा

तुम अगर चाहती तो
फाँसी की सज़ा दे सकती थी।

## आज की रात

आज की रात यों ही गुज़रेगी
तेरे बारे में लिखते हुए
तुझे याद करते हुए।

कितना अच्छा-भला था मैं
जब तेरे तन-मन से मैं
परिचित नहीं हुआ था,
कितना भला-चंगा था मैं
जब तेरे ऊपर जी-जान से
समर्पित नहीं हुआ था।

आज की रात क्या यों ही गुज़रेगी
तेरे बारे में सोचते हुए
तेरे नाम की माला जपते हुए?

## यादें

तुम्हारे बिना सचमुच
बड़ा सूना-सूना लगता है।
याद आ रही हैं कल की बातें,
कल, जब तुम मेरे साथ थीं।

कल कितना आकर्षक और जीवंत था
उसमें हमारे हृदय की धड़कनें बोलती थीं
तुम सामने थीं, तुम्हारा मन सामने था
तुम्हारी आँखों में मैं अपना
अक्स देख सकता था।

कल हमारे लिए न भूलने वाला दिन था,
ऐसे दिन ज़िंदगी में बार-बार नहीं आते।

पर जब आते हैं, तो स्मृति-पटल पर
अमिट छाप छोड़ जाते हैं।

आज तुम साथ नहीं हो
पर कल के साथ की जो यादें बाकी हैं
वे हृदय को इतना कचोट रही हैं
कि मैं हृदय पर हाथ रख लेता हूँ,
फिर भी चैन नहीं पाता।
मेरे हाथ की बजाय
अगर तुम्हारा हाथ
इस समय मेरे हृदय पर होता,
तो मन कितना निश्चिंत होता !

## बदला

वियोग के इन दिनों में
जिस पीड़ा को मैंने
झेला है अब तक,
उसी को वहाँ
तुम भी झेलती होगी।

पर इसकी मुझे
तनिक भी प्रसन्नता नहीं है,
क्योंकि मैं तुमसे
कोई बदला लेना नहीं चाहता।
फिर पीड़ा की कामना
क्यों करूँगा ?

## मजबूरी में

जब आदमी को
अमृत नहीं मिलता,
वह ज़हर पीने लगता है।
पर सच यह है—
पीना हर आदमी
अमृत ही चाहता है।

मुझे भी जब तेरा
अधर-रस नहीं मिलता
मैं सोमरस पी लेता हूँ,
किसी प्रकार
बेसहारा यह ज़िंदगी,
गुज़ार लेता हूँ।

आदमी है,
आखिर आदमी ही;
कोई सहारा तो उसे
चाहिए ही।
बिना किसी दोष के
कोई भगवान जब उससे
मुँह मोड़ लेता है;
तभी किसी मजबूरी में
वह शैतान का आश्रय
खोज लेता है।

## माफ़ करना

माफ़ करना!
कल तेरे

अमृतमय अधरों की
इतनी याद आई,
कि मैंने कर डाली
थोड़ी सी बेवफ़ाई।
भटकता हुआ कल मैं
जा पहुँचा—
एक मयखाने में।
वहाँ अपनी
दूर करने को बेचैनी
लगा लिया एक जाम
होंठों से।

पर सच मान—
एक जाम की कड़वाहट से
कुछ भी तो नहीं हुआ।
और मैं जाम पर जाम
पीता चला गया।
आश्चर्य, हर जाम के साथ
तेरी और ज्यादा याद आई।
और मैं सोचता रहा
आखिर क्यों की मैंने
ऐसी बेवफ़ाई?

## गिरा हुआ आदमी-१

किसी भी तरह के दर्द में
अगर तुम्हारी आँखों के
कोर भीग जाएँ।
तो थोड़ा इस गिरे हुए

## मजबूरी में

जब आदमी को
अमृत नही मिलता,
वह जहर पीने लगता है।
पर सच यह है—
पीना हर आदमी
अमृत ही चाहता है।

मुझे भी जब तेरा
अधर-रस नही मिलता
मैं सोमरस पी लेता हूँ,
किसी प्रकार
बेसहारा यह ज़िंदगी,
गुज़ार लेता हूँ।

आदमी है,
आखिर आदमी ही;
कोई सहारा तो उसे
चाहिए ही।
बिना किसी दोष के
कोई भगवान जब उससे
मुँह मोड़ लेता है;
तभी किसी मजबूरी में
वह शैतान का आश्रय
खोज लेता है।

## माफ़ करना

माफ़ करना !
कल तेरे

अमृतमय अधरों की
इतनी याद आई,
कि मैंने कर डाली
थोड़ी सी बेवफ़ाई।
भटकता हुआ कल मै
जा पहुँचा—
एक मयख़ाने में।
वहाँ अपनी
दूर करने को बेचैनी
लगा लिया एक जाम
होंठों से।

पर सच मान—
एक जाम की कड़वाहट से
कुछ भी तो नही हुआ।
और मैं जाम पर जाम
पीता चला गया।
आश्चर्य, हर जाम के साथ
तेरी और ज्यादा याद आई।
और मै सोचता रहा
आखिर क्यों की मैने
ऐसी बेवफ़ाई ?

## गिरा हुआ आदमी-१

किसी भी तरह के दर्द में
अगर तुम्हारी आँखों के
कोर भीग जाएँ।
तो थोड़ा इस गिरे हुए

आदमी को भी
याद कर लेना।
शायद तुम्हारे अपने दर्द में
कुछ राहत मिल जाए इससे।

## गिरा हुआ आदमी-२

मै गिरा हुआ हूँ आज
तुम्हारी नज़रों मे,
पर यह भूल गई
कि मुझे गिराने वाली तुम ही हो।
पहले मुझे उठाकर
सीने से लगाया था,
लेकिन फिर छोड़ दिया
और मै
गिरा रह गया।

## दर्द ही दर्द

मैंने कभी नही सोचा था
कि मै तुम्हारे प्यार मे
इतना बेचैन हो जाऊँगा
और दर्द भरी कविताएँ लिखूंगा।
पर इसमें तुम्हारा या मेरा
दोष किसी का भी नही है शायद।

शुरू में तुमने जो प्यार मुझे दिया था
उसी को आगे बढ़कर स्वीकार मैंने किया था।

अब अगर दर्द दे रही हो
तो अस्वीकार कैसे कर दूँ ?
शायद तुम्हारे पास देने के लिए
अब दर्द ही दर्द बचा हो !

## सुझाव

प्यार के अनुभवों के बल पर
अब मैं कुछ सुझाव
प्यार करने वालों को दे सकता हूँ।
प्रथम, प्यार कभी न करो।
दूसरा, अगर करो भी
तो उसे ज़ाहिर न होने दो।
तीसरा, अगर ज़ाहिर भी कर दो
तो जिसे प्यार करते हो
उससे किसी प्रकार की आशा
कभी न करो।

क्योंकि जहाँ तुमने आशा की
वहीं तुम्हें निराशा हाथ आयेगी—
यह निराशा तुम्हारे जीवन को ही
बदल देगी।
तुम रातों को उठ-उठकर जागोगे,
और एक मीठी नींद तक को
तरसोगे।

## सहनशीलता

अब तो सही नहीं जाती
दर्द भरी यह जिंदगी
क्योंकि इस दर्द का
कोई इलाज कभी होगा
यह आशा भी अब
धूमिल पड़ चुकी है।

फिर भी मैं सहूँगा
इस दर्द को जिंदगी भर
क्योंकि यह दर्द
मुझे किसी ने दिया नहीं है,
मैंने स्वयं ही इसे
अर्जित किया है।
बड़ी मेहनत से की हुई
गाढ़ी कमाई है यह !

## स्वप्न और यथार्थ

मीत मेरे !
आज तेरी छवि के साथ
रात भर सोया रहा हूँ।
अब जब जागा हूँ।
तो याद आ रहा है
वह स्वप्न कितना मोहक था।
तू मेरी बाँहों में थी
मेरा सर तेरे वक्ष पर था।
तेरी गंध को मैं
अपनी साँसों में महसूस कर सकता था।

स्वप्न अब बीत चुका है
जीवन का कटु यथार्थ सामने है।
उस यथार्थ में
तू किसी और की
बाँहों में सोती है।
किसी और का सर
अपने वक्ष पर रखकर
उसे सांत्वना देती है।

## विदाई के बाद

तुमसे विदा ले लेने के बाद भी
मुझे तुम्हारे शरीर की बिजलियों से
मुक्ति नहीं मिल पाई है।

मैं अभी तक कांप रहा हूँ
मेरे हाथ-पाँव भी सुन्न से हैं
यहाँ तक कि होंठों को भी
लकवा मार गया है।

यह तुमने क्या कर दिया—
मैं तो बिलकुल अपाहिज
होता जा रहा हूँ।
अब कौन सँभालेगा मुझे
तुमने अगर स्थायी रूप से
विदा दे दी तो ?

मैं इस बार होली मिला भी नहीं,
मिलता भी किससे
तुम तो उतनी दूर थीं।

## तुम्हारे बिछोह में

तुम्हारे बिछोह में
मन दूर-दूर तक भटकता है।
और मैं भटकन को
कम करने के लिए,
अनदेखे शहरों के
दौरों पर निकल पड़ता हूँ।
गेस्ट हाउसों, रेस्ट हाउसों में
रातें गुजारता हूँ;
'टावरों' पर खड़े होकर
क्षितिज को निहारता हूँ।
लेकिन भटकन कम नहीं होती,
वह बढ़ती ही जाती है।

## तेरा स्थानापन्न नहीं

जब तेरी याद आती है
होठों से जाम छुआ लेता हूँ।
मुझे बाँहों में भरने की
तबियत होती है जब
तकिये को सीने से लगा लेता हूँ।
पर जाम का कसैलापन
और तकिये का गिलगिलापन

## तुम्हारे न होने पर

तुम्हारे न होने पर
अब सब कुछ व्यर्थ लगता है।
व्यर्थ लगता है
आसपास का माहौल
या दोस्तों की बातें।
व्यर्थ लगता है
जाना-पहचाना घर
लेकिन अकेले में
बीतती रातें।
तुम्हारे न होने पर
किसी का भी होना
कोई अर्थ नहीं रखता है।

## होली : इस बार

होली कभी भी मुझे
इतनी फीकी नहीं लगी
जितनी कि इस बार।
सभी के चेहरों पर रंग था
मन में शायद उमंग भी थी
पर मेरा अंतरंग
इतना उदास कभी नहीं रहा
जितना कि इस बार।

मैं इस बार होली खेला तक नहीं,
खेलता भी किससे
तुम तो इतनी दूर थी।

मैं इस बार होली मिला भी नहीं,
मिलता भी किससे
तुम तो उतनी दूर थीं।

## तुम्हारे बिछोह में

तुम्हारे बिछोह में
मन दूर-दूर तक भटकता है।
और मैं भटकन को
कम करने के लिए,
अनदेखे शहरों के
दौरों पर निकल पड़ता हूँ।
गेस्ट हाउसों, रेस्ट हाउसों में
रातें गुज़ारता हूँ;
'टावरों' पर खड़े होकर
क्षितिज को निहारता हूँ।
लेकिन भटकन कम नहीं होती,
वह बढ़ती ही जाती है।

## तेरा स्थानापन्न नहीं

जब तेरी याद आती है
होंठों से जाम छुआ लेता हूँ।
मुझे बाँहों में भरने की
तबियत होती है जब
तकिये को सीने से लगा लेता हूँ।
पर जाम का कसैलापन
और तकिये का गिलगिलापन

कह देता अपनी कहानी स्वयं—
कि वह वह है, तू नहीं !
सचमुच—
तेरा तो कोई, स्थानापन्न ही नहीं !

## तुम्हारा चित्र

तुम्हारा एक चित्र हमेशा
मेरी जेब में रहता है,
लेकिन मुझे उसे देखने की
जरूरत ही नहीं होती ।
कारण तुम्हारा जो चित्र
मेरी आँखों के सामने है
या मन के पर्दे पर अंकित है
उस पूरे चित्र के सामने
यह छोटा-सा अधूरा चित्र
बहुत ही मामूली और
बेजान-सा लगता है !

## मजबूरी

साथ तो तुम अब भी
हर समय रहती हो,
पर पहले की तरह
सटकर नहीं बैठ सकतीं;
जी चाहने पर
प्यार नहीं कर सकती ।

## आत्मरति—एक मजबूरी

जब तेरी याद आये
तेरे शरीर की याद आये
तू ही बता मैं क्या करूँ
सिवाय इसके कि
अपने शरीर के उन अंगों को
जिनसे तेरे शरीर के
विभिन्न अंगों को
छुआ है,
स्वयं ही देखूं,
सराहूँ और सहलाऊँ
या प्यार करूँ ?

## अमावस

जब भी शाम होती है,
मेरी आँखे उठ जाती हैं
आकाश की ओर।
पर वहाँ कोई पूर्णिमा नहीं,
घोर अमावस होती है।

## अकेलापन

बंधु-बांधवों, मित्रों और
चाहने वालों से दूर
इस मायावी महानगरी में
झेल रहा हूँ अकेलापन

कौन से स्वर्णिम भविष्य
के लिए ?
मुझे नहीं चाहिए ऐसा भविष्य
जिसके कारण
वर्तमान को भी पूरी तरह
जी पाने का अधिकार
छिन जाए !

## दोपहरी

यह तपती दोपहरी
एकांत कमरा
और यादें तुम्हारी !
अब कहाँ जाऊँ मैं
और बाँटूं अपनी
बेचैनी और तपन ।

## रात

रोज़ जब शाम आती है,
तेरी यादें साथ लाती हैं ।
मैं कोसता हूँ चाँदनी को
जो रात भर जलाती है ।

## चांद और चाँदनी-१

कमरे की खिड़की से
दूर आसमान में
भरा-पूरा चांद दिखाई दिया है।
क्या आज पूर्णिमा है ?

मुझे तो यहाँ
तिथियों का
पता तक नहीं चलता
क्योंकि घर में या आसपास
कोई बताने वाला नही होता।

## चांद और चांदनी-२

आसमान के चांद को
देखने की मुझे
कभी जरूरत ही नही हुई थी
क्योंकि एक चांदनी
हर समय मेरे साथ रहती थी।

अब वह चांदनी
मुझसे दूर है
तो आसमान का चांद
देख लेता हूँ
महज चांदनी की
याद ताजी करने को।

## याद किया करता हूँ

रात को जब
कोशिशो के बावजूद
नींद नहीं आती,
मुझे नहीं मालूम
तुम क्या करती हो ?
पर मैं तुम्हें बताता हूँ—
मैं फ़कत तुम्हे
याद किया करता हूँ ।

## जादू

तुम्हारा चेहरा
तुम्हारा शरीर
सामने नही है,
पर नाम तुम्हारा
जुबान पर है,
और दिल मे भी ।
तुमने यह
क्या जादू
कर दिया है मुझ पर ?

## बिजली

तुम चमकी थी
बिजली की तरह
और मुझ पर
बिजली गिराकर
अदृश्य हो गई ।

## मोह

सदा सुखी रहते हैं वे लोग
जो किसी का मोह नहीं पालते;
किन्तु हर पल दुखी रहते हैं वे,
जो मोह छोड़ नही पाते।

## कव

तू अव कव आएगी
मेरी नजरों के सामने ?
अजव सरूर-सा है
तेरी नज़रों के जाम में।

## कमज़ोरी

तुम तो मेरी ज़िंदगी थीं
अव मौत में तवदील
क्यों हो रही हो ?

मैं चाहता था तुम्हें
ज़िंदगी के रूप में ही अपनाना
अव अगर मौत के रूप में
सामने आओगी,
तो उसी रूप में अपनाना होगा।

क्योंकि
एक बार स्वीकारने के बाद
तुम्हें अस्वीकार करने की
शक्ति मुझमें
नहीं बची है शेष !

## शोर

पड़ोसी के कमरे में
आधी रात को भी
बहुत शोर हो रहा है।
मेरी नींद उचट जाती है—
कच्ची अधूरी नींद,
जिसमें मैं तुम्हारा
सपना देख रहा था।

मेरे मन में भी बहुत शोर
होने लगा है,
और अब मुझे उसी के कारण
दुबारा नींद नहीं आ रही।
उधर पड़ोसी के कमरे का शोर
अभी शांत नहीं हुआ है
क्योंकि वहाँ बहुत सारे लोग हैं।
इधर मेरे मन का भी शोर
शांत नहीं हो रहा है
क्योंकि मैं अकेला हूँ—
निपट अकेला
नींद आये भी तो कैसे ?

## ईश्वर से ईर्ष्या

मैंने जीवन में पहली बार
ईश्वर से कुछ माँगा था—
केवल यह चाहा था
कि तुमसे अलग न होऊँ !
पर ईश्वर तो बड़ा ही
ईर्ष्यालु निकला।
उसने मुझे तुमसे
अलग ही कर दिया।
अब ऐसे ईर्ष्यालु ईश्वर को
तुम पूजो
या उस पर श्रद्धा रखो,
तो क्या मुझे
ईर्ष्या नहीं होगी ?

## रातों के अँधेरों में

रातों के इन अँधेरों में
मैं तुम्हारे एक छोटे-से
स्पर्श को तरसता हूँ।
रातों के इन अंधेरों में
कोशिशों के बावजूद
मुझे नींद नहीं आ पाती।
रातो के इन अँधेरों में
फ़िल्म तारिकाओं,
या विमान परिचारिकाओं,
या अन्य सहायिकाओं का
आंगिक स्पर्श,

जो दिन में मेरे व्यवसाय का
अंग होता है,
मुझे ज़रा भी याद नही आता।
मैं तो बस तुम्हारे
एक छोटे-से स्पर्श को
तरसता हूँ !

## भीड़ में अकेला

एयरपोर्ट के सामने के पार्क में
अँधेरा घिर आया है
चारो ओर बत्तियों के होते हुए भी।
बैठे हुए हैं कुछ जोड़े सटे-सटे
एक-दूसरे से कुछ कहते-से।

मैं हूँ बिलकुल अकेला यहाँ
चारो ओर भीड़ के होते हुए भी।
नही है कोई मीत ऐसा पास
जिसके कान में कुछ कह सकूँ—
मन के भारी बोझ को
कुछ हल्का किसी प्रकार कर सकूँ।

## वादे

मैं तो वादे निभाऊँगा ही
पर तेरे वादे क्या हुए ?
क्या सारे के सारे
समय की भेंट चढ़ गए ?

## छुट्टी के दिन

आज इस छुट्टी के दिन
मैं हूँ अकेला यहाँ
इस कमरे में।

टाइपराइटर खोलकर
करना चाहता हूँ कुछ काम,
लेकिन तुम्हारी स्मृति और देहगंध
करने लगी है परेशान,
और डालने लगी है विघ्न।

काम छोड़कर मैं
करने लगा हूँ टाइप—
यह कविता।
क्या तुम्हें भी कभी
घर और दूसरे कामों के बीच
मैं इसी तरह याद नहीं आता?

## दूरी

मैं तुम्हें पुकारता हूँ हरदम
हज़ार मील दूर से भी।
कभी-कभी मेरी आवाज़
तुम्हारे कानों तक भी
पहुँच जाती है—
और तुम उसे सुनती हो।

लेकिन तुम चार पंक्तियाँ लिखकर

जो दिन में मेरे व्यवसाय का
अंग होता है,
मुझे ज़रा भी याद नहीं आता।
मैं तो बस तुम्हारे
एक छोटे-से स्पर्श को
तरसता हूँ !

## भीड़ में अकेला

एयरपोर्ट के सामने के पार्क में
अँधेरा घिर आया है
चारों ओर बत्तियों के होते हुए भी।
बैठे हुए हैं कुछ जोड़े सटे-सटे
एक-दूसरे से कुछ कहते-से।

मैं हूँ बिलकुल अकेला यहाँ
चारों ओर भीड़ के होते हुए भी।
नहीं है कोई मीत ऐसा पास
जिसके कान में कुछ कह सकूँ—
मन के भारी बोझ को
कुछ हल्का किसी प्रकार कर सकूँ।

## वादे

मैं तो वादे निभाऊँगा ही
पर तेरे वादे क्या हुए ?
क्या सारे के सारे
समय की भेंट चढ़ गए ?

## छुट्टी के दिन

आज इस छुट्टी के दिन
मैं हूँ अकेला यहाँ
इस कमरे में।

टाइपराइटर खोलकर
करना चाहता हूँ कुछ काम,
लेकिन तुम्हारी स्मृति और देहगंध
करने लगी है परेशान,
और डालने लगी है विघ्न।

काम छोड़कर मैं
करने लगा हूँ टाइप—
यह कविता।
क्या तुम्हें भी कभी
घर और दूसरे कामों के बीच
मैं इसी तरह याद नही आता ?

## दूरी

मैं तुम्हें पुकारता हूँ हरदम
हज़ार मील दूर से भी।
कभी-कभी मेरी आवाज़
तुम्हारे कानो तक भी
पहुँच जाती है—
और तुम उसे सुनती हो।

लेकिन तुम चार पंक्तियाँ लिखकर

उत्तर क्यों नहीं देती ?
क्या मेरे हृदय की
करुण-व्याकुल आवाज़
तुम्हारे हृदय में
जरा भी हलचल नहीं मचाती ?

## अधूरी इच्छा

अद्वितीय संबंध की
पहली वर्षगाँठ,
कितने मनोयोगपूर्वक मनाने की
इच्छा थी,
पर इच्छा मन में धरी की धरी
रह गई।

समय के प्रवाह ने
हमारे बीच
हजारों मील की दूरी कर दी।
अब तुम एक सिरे पर हो,
मैं दूसरे सिरे पर।

बीच में बस टेलीफ़ोन की
लम्बी लाइन है,
जिसके माध्यम से मै
बस औपचारिक बधाई
देकर संतोष कर लेता हूँ।

तुम्हें भी इसी में
संतोष करना पड़ता है।
पर क्या वास्तव में
संतोष हो पाता है ?

## एक और वर्षांत

आज मैं कितना अकेला
इस संध्या वेला में
खड़ा हुआ वालकनी में।

जो पास थी
वह दूर हो गई
इस वेरहम वर्ष में।
नियति मुझको कहाँ से कहाँ
ले आई।
और तुमसे दूर करके
इस मायावी महानगरी में लाकर
पटक गई।

दोष देना व्यर्थ है किसी को भी
इस सबके लिए।
मेरे लिए जो अर्थ है इस ज़िंदगी का
वह नहीं हो सकता,
किसी के लिए।
फिर क्यों किसी को दोष दूँ,
और क्यों स्वयं को भी कोसूँ ?

□□